ग्रामीण पाठकों के लिए

उसका बचपन

(संक्षिप्त संस्करण)

कृष्ण बलदेव वैद

चित्रकार

पार्थ सेनगुप्ता

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-2160-9

पहला संस्करण : 1997

पहली आवृत्ति : 2000 (शक 1922)

Uska Bachpan (*Hindi*)

रु. 10.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ए-5 ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

1

चारपाई की गहराई में दादी औंधे मुंह पड़ी हुई है, जैसे कोई बच्चा रोते रोते सो या मर गया हो। ड्योढ़ी इस मकान का मुंह है, जो कभी खुलता है तो कभी बंद हो जाता है।

ड्योढ़ी की दीवारें जगह-जगह से उधड़ी हुई हैं। कच्चे पलस्तर के मोटे-मोटे छिलके ऐसे दिखाई देते हैं जैसे किसी बीमार के ओठों पर जमी हुई पपड़ियां हों। छत की शहतीरें धुएं के कारण काली हो गई हैं और उनसे लटकने हुए काले जाले यों झूलते रहते हैं मानो इस ड्योढ़ी के गहने हों।

ड्योढ़ी का दरवाजा गली में खुलता है। दादी आने जानेवालों की पदचाप सुनती रहती है और अनुमान लगाती रहती है कि कौन किधर जा रहा है। दादी के कान बहुत पतले हैं, लेकिन मां के शायद उससे भी अधिक पतले हैं। वह सब कामकाज छोड़कर धम-धम करती बाहर आ जाती है और दादी को पास बैठी स्त्री या पुरुष की पीठ पर हाथ फेरते और आशीर्वाद देते देखकर दांत पीसती हुई लौट जाती है। तब दादी की आवाज धीमी हो जाती है।

अगर ऐसे किसी अवसर पर बीरू कहीं मां के हत्थे चढ़ जाए, तो वह पिट जाता है और आंखें मलता हुआ गली में जा खड़ा होता है।

गली के बीचों बीच एक नाली बहती है—गाढ़ी, काली स्याही की एक टेढ़ी मेढ़ी लकीर की तरह—जिसमें कीड़े रेंगते रहते हैं, मक्खियां भिनभिनाती रहती हैं, भिड़ें उड़ती रहती हैं। हर वक्त रौनक सी लगी रहती है।

बीरू एक लंबी छड़ी से उस नाली को जहां-तहां कौंचना शुरू कर देता है। भिड़ों को छेड़ने में उसे बहुत मजा आता है।

वह एक निहायत ही छोटा और बेवकूफ बच्चा है।

दादी का मटमैला बदबूदार लिहाफ घिस घिसकर प्याज के छिलके की तरह पतला हो गया है। लिहाफ में घुसकर दादी की गोद में बैठने से उसे बड़ा सुख मिलता है, नींद आ जाती है, मीठे-मीठे सपने आते हैं। मां उसे घसीटकर अंदर ले जाती है।

—वहां गंदगी में क्या मिलता है तुझे ? सौ बार मना कर चुकी हूं। खबरदार, जो फिर कभी उसकी गोद में बैठा !

मां उसे एक आखिरी झटका देकर बुड़बुड़ाती हुई रसोई में चली जाती है और बरतन उलटने पलटने लगती है। वह दियासलाई ढूंढ रही है। दिन में न जाने कितनी बार दियासलाई गुम होती है !

—न जाने कहां उड़ गई ! यहीं तो रखी थी। जा, जाके बाजार से दियासलाई ले आ !

गली में पहुंचते ही उसके आंसू सूख जाते हैं। जैसे हवा लगने से पसीना। वह पैसे नाली में फेंक देता है। फिर उन्हें ढूंढने के लिए नाली के कीचड़ को उधेड़ने कुरेदने लगता है। फिर भूल जाता है कि वह पैसे ढूंढ़ रहा है। नाली में और भी कई अच्छी चीजें हैं। वह उन्हीं में खो जाता है। उसके गालों पर फिर फूल खिल उठते हैं, जैसे उसके सपने फिर उसे मिल गए हों।

मां चूल्हे के पास बैठी, उचक-उचककर, फूंकें मार रही है। धुआं

सारे घर में किसी भूत की भांति मंडरा रहा है।

—यह गीली पानी लकड़ियां ! मां बुड़बुड़ाती है।

दादी को विश्वास है कि मां हर रोज सुबह सवेरे उठकर लकड़ियों पर पानी उंड़ेल देती है।

—गीली पानी लकड़ियां !

सब खांस रहे हैं। मां, दादी, बीरू खुद। दादी की खांसी सबसे अधिक सूखी, सबसे अधिक कड़वी, सबसे अधिक भयानक है।

—गीली पानी लकड़ियां !

मां की आंखों से पानी बह रहा है। दादी की खांसी मंद नहीं होती।

—पानी ले आऊं, दादी ?

दादी की खांसी एकदम कम हो जाती है। वह खांसता हुआ मां के पास जा खड़ा होता है।

—मां, दादी पानी मांग रही है।

—पानी मांग रही है ? हुंह, अंधे हो, देखते नहीं, लकड़ी को रो रही हूं ? मेरे चार हाथ तो नहीं, जाओ, भागो यहां से ! पानी मांग रही है !

वह दादी के पास लौट जाता है। और उसके साथ मिलकर खांसने लगता है।

—गीली पानी लकड़ियां !

वह मां की बड़बड़ाहट को करीब आता सुनकर चौंक उठता है।

—तू यहां खड़ा क्या कर रहा है ? बाहर क्यों नहीं जाता ? देखता नहीं, अंधा है ? धुएं में खड़ा है ? बड़ा आया दादी का हमदर्द।

वह सहमा-सहमा-सा मां की ओर देखता है।

—न मरेगी, न हमारी जान छूटेगी।

—हाय राम !

—जब से आई है सुख की एक सांस तक नहीं मिली !

—हे दीनदयाल !

—छलफरेब तो कोई इससे सीखे !

—जो करेगा सो भरेगा !

—बड़ी आई धर्मात्मा ! हुंह !

बीरू वहीं कोने में खड़ा रहता है। कभी मां की ओर देखता है, कभी दादी की ओर।

—तू यहां से जाएगा कि नहीं ? धुएं से अंधा हो गया तो, मैं क्या करूंगी ?

और मां जाने क्यों अचानक रोने बैठ जाती है। एक नजर दादी के डोलते हुए शरीर पर डालकर लड़खड़ाता हुआ बीरू बाहर चला जाता है।

बाहर बच्चे कूद फांद मचा रहे हैं। हाथ ऊपर उठा-उठाकर, उछल-उछलकर नारे लगा रहे हैं—इंकलाब जिंदाबाद !

—टोडी बच्चा हाय-हाय !

—हाय-हाय ! हाय-हाय !

कुछ देर वह एक तरफ खड़ा आंखें मसलता रहता है, फिर दौड़कर उनकी टोली में शामिल हो जाता है।

काफी देर खेलने के बाद बच्चे अपने-अपने घरों की ओर रवाना हो जाते हैं।

उसके घर का दरवाजा बंद है। वह नाली के कीचड़ पर जड़ी हुई सी सुनहरी भिड़ों को देखने लगता है। उन्हें गिनता रहता है, कीचड़ में धकेलने, पकड़ने और डंक निकालकर तागे से बांधकर हवा में उड़ाने के मनसूबे बांधता रहता है। खड़ा-खड़ा थक जाता है तो

वहीं नाली के किनारे बैठ जाता है और एक तिनके से लकीरें खींचने लगता है।

आखिर जब वह घर लौटता है तो देखता है बाबा दादी के पास बैठे हुए हैं।

—दोपहर होने को आई है, बेटा, और हराम है जो एक दाना तक मुंह में गया हो। बुड्ढा शरीर। क्या इसीलिए लाए थे यहां गांव से ?

—सुबह से जानबूझकर धुआं मचा रही है।

बाबा की बगल में सरकारी कागजों का पुलिंदा है। एक हाथ में दवात, दूसरे में एक थैला। वह आगे बढ़कर थैले को टटोलने लगता है। उसमें तरकारियां हैं। वह एक गाजर निकाल लेता है। गाजर बहुत मीठी है।

जब मां पास आ खड़ी होती है तो उसका मुंह गाजर चबाते-चबाते रुक जाता है।

—भर लो कान, कर लो मेरी बुराई।

—चुप, कुतिया !

गाजर बीरू के हाथ से गिर पड़ती है।

—बस मुझ पर बरसना आता है।

—मैं कहता हूं, चली जाओ यहां से !

—चली कहां जाऊं ?

बाबा एक गंदी गाली देते हैं।

—ताली तो आखिर दोनों हाथों से बजती है !

—तू...तू...तू...

बाबा के मुंह से झाग छूटने लगती है।

—बेटा, तुम क्यों परेशान होते हो। सारा दोष मेरा ही है।

—बात करने का भी हक़ नहीं मुझे ! मैं इस घर की नौकरानी तो नहीं !

—मैं कहता हूं, दूर हो जाओ मेरी आंखों से !

—मां की बात तो ध्यान से सुन ली, उस पर तो गुस्सा न आया, और जब मैं बोलने लगी...आखिर मैं भी तो किसी की जाई हूं !

—हरामजादी !

दादी खांसने लगती है।

—मैं कहता हूं, जाकर आग जलाओ !

—आग अपने सिर से जलाऊं ? गीली एनी लकड़ियां !

बाबा उस पर पिल पड़ते हैं।

—और मारो ! ... मार डालो ! और मारो ! ... मार डालो !

मां को पिटते देख उसका शरीर ढीला पड़ जाता है। वह हिचक-हिचककर रोने लगता है। गाजर का टुकड़ा उसके हलक में अटक जाता है।

2

—आज रात की गाड़ी से देवी और रघुपत गांव से आ रहे हैं।

देवी तो उसकी बड़ी बहन है, लेकिन यह रघुपत न जाने कौन है !

—आ रहे हैं तो मैं क्या करूं ? नाचूं उठकर ? मैंने तो कह दिया कि रात के लिए घर में न एक चुटकी आटा है न दाल न धी, फिर उस वक्त मेरी जान न खाना।

यह रघुपत कौन है ?

—इतनी जल्दी सब ख़त्म कैसे हो गया ?

—ख़त्म नहीं हुआ तो क्या मैं खा गई सब ?

बाबा के माथे पर मोटी-मोटी त्यौरियों का एक जाल-सा बुन जाता है।

—मिट्टी का तेल भी नहीं है।

—कुछ है भी ?

—कड़कने से कुछ नहीं होगा !

बाबा ड्योढ़ी के दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।

—बस, शाम तक उस जूड़ी वाले के साथ इधर-उधर घूमते रहना और रात को सब कुछ आसमान से बरस पड़ेगा !

जूड़ी वाला बाबा का एक सिक्ख दोस्त है।

—आटे का स्यापा करने ही जा रहा हूं !

—नमक मिर्च के लिए भी कुछ पैसे चाहिए, सुन लिया ?

—सुन लिया, सुन लिया, सुन लिया !

बाबा के हाथ माथे की तरफ उठते हैं, फिर एक क्षण के लिए रुक जाते हैं। फिर बाबा बाहर चले जाते हैं।

चाचा रघुपत सिर झुकाए दादी की चारपाई पर बैठे हैं। वह आहिस्ता आहिस्ता उनकी पीठ पर हाथ फेर रही है।

—बेटा, मैं यहां बहुत दुखी हूं, बहुत दुखी हूं ! मेरी जो दुर्गति होती है, भगवान दुश्मन की भी न करे।

चाचा रघुपत का सिर कुछ और नीचे झुक जाता है और वह अंगुली से फर्श पर लकीरें खींचने लगते हैं।

—एक-एक चीज के लिए तरसती रहती हूं। वक्त पर दो रोटियां तक नहीं मिलतीं। अब मैं यहां नही रहूंगी, बेटा !

बीरू दादी के पहलू से उठ खड़ा होता है।

—भगवान लंबी उमर दे इस बच्चे को ! अगर यह न होता तो मैं इस घर में प्यासी मर जाती।

वह अंदर चला जाता है। रसोई में मां और बाबा आपस में गुर्रा रहे है।

वह उलटे पांव वापस ड्योढ़ी में लौट जाता है।

—अपनी आंखों से देख ले, बेटा, चुड़ैल ने घर को पागलखाना बना दिया है।

वह फिर अंदर चला जाता है।

—मैं कह रहा हूं, चुपचाप खड़ी रह, नहीं तो...बाबा मां का बाजू इतनी जोर से मरोड़ देते हैं कि उसके मुंह से चीख छूट निकलती है।

वह फिर ड्योढ़ी में चला जाता है।

—मेरी आख़िरी घड़ियां हैं, बेटा। अगर मुझे बचाना है...।

देवी कहां है ?

इसी प्रश्न का सहारा लेकर वह बाहर की ओर चल देता है।

—बीरू !

वह मुड़कर देखता है। बाबा उसे इशारे से अंदर बुला रहे हैं। रसोई में एक कोने में मां औंधे मुंह पड़ी है।

—मां को क्या हुआ है ?

—जाकर नत्थू की दुकान से दो सेर आटा ले आ।

—मां को क्या हुआ है ?

—कुछ नहीं। तुझे जो कहा है, कर।

—पैसे ? वह हाथ फैलाकर कहता है, जैसे मां की ओर से बोल रहा हो।

—पैसे नहीं हैं। उधार।

दादी की चारपाई के पास से गुजरते हुए उसे सुनाई देता है—बेटा, मेरा भगवान ही जानता है कि मैं कैसे जी रही हूं यहां !

गली में पहुंचते ही वह भगवान को एक गंदी गाली देकर कुछ सहम सा जाता है।

नत्थू दुकान की दहलीज पर बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा है। उसकी पीली पीली मूंछें हर कश के साथ सिकुड़ती फैलती हैं। दूर से यूं दिखाई देता है कि ये मूंछें उसकी नहीं, बल्कि हुक्के की हैं। उसकी चोटी हमेशा 'अलिफ' की तरह ऊपर उठी रहती हैं और उसका एक हाथ हमेशा धोती के अंदर छुपा कुछ न कुछ टटोलता रहता है। लोग उसे नत्थू शेर कहते हैं।

बीरू को देखते ही नत्थू गरजने लगता है—आ, आ, आ गया। बोल, क्या चाहिए ? ... आटा ?... मैं पूछता हूं तेरे बाप ने मशीन लगा रखी है यहां ? चले आते हैं मुंह उठाकर !

नत्थू को इस तरह उबलते देख बीरू भूल जाता है कि वह आटा लेने आया है और वह हंसते हुए चिल्लाने लगता है—ऐरा गैरा नत्थू

खैरा।

नत्थू हुक्का छोड़कर बड़बड़ाता हुआ उसकी ओर बढ़ता है और वह चीखता हुआ घर की ओर भाग खड़ा होता है। गली के नुक्कड़ पर पहुंचकर रुक जाता है।...आटा लेकर वापस नहीं लौटेगा, तो ...आटे वाले कपड़े को मरोड़-मरोड़कर उसने एक छोटा सा रस्सा बना लिया है।

3

जब चाचा रघुपत कश लगाते हैं, तो सांप के फुफकारने की सी आवाज पैदा होती है और उनके सिगरेट का लाल नगीना दमक उठता है। उसके प्रकाश में चाचा के सूखे और तमतमाए हुए चेहरे पर जड़े हुए पसीने के कतरे अजीब लगते हैं। उनकी छोटी- छोटी चमकदार आंखें एक ही दिशा में देख रही हैं।

बीरू ड्योढ़ी के एक कोने में दुबका बैठा है। उसकी आंखें उस लाल नगीने पर जड़ी हुई हैं जो अंधेरे में जुगनू सा चमक रहा है।

अचानक कोई कहीं से उठता है, इधर आता है, उधर जाता है, ड्योढ़ी में आता है, रसोई में जाता है। मां अंधेरे में भी चैन से नहीं बैठ सकती। न जाने क्या ढूंढ रही है। शायद चैन !

लाल नगीना दमक रहा है।

वह अपने गुड़गुड़ाते हुए पेट को बहुत देर तक सहलाता रहता है, जैसे कोई बड़ा किसी बच्चे को बहला रहा हो।

इतना छोटा सा पेट, एक ही रोटी से ठसाठस भर जाए।

वह चुपचाप रोने लगता है। रोते-रोते उसका ध्यान बाबा की

ओर जाता है। और उसके आंसू कम हो जाते हैं। बाबा जरूर आटा लेने गए होंगे। थोड़ी ही देर में आ जाएंगे। देवी उठकर रोटियां पकाएगी। सब खाएंगे।

फिर उसके मुंह से एक बारीक और तेज चीख निकल जाती है। देवी उसे अपनी बांहों में समेटकर चूमने लगती है। चीख टूटकर सुबकियों में तबदील हो जाती है। सब लोग अपनी जगह पर हिलते हैं। मानो अंधेरा करवटें बदल रहा हो।

—तू अभी तक सोया नहीं ?

—सो जा, मेरे वीर।

—आ, मेरे पास आ जा।

—सोया-सोया डर गया है बेचारा।

और वह इन आवाजों को सुनते-सुनते चुप हो जाता है।

—एक बसते रसते घर में दिया तक न जले ! राम राम !

—तेल के बिना दिया कैसे जले ? मैं कहां से लाऊं तेल ?

—जिस घर में कुलच्छमी का बासा हो, उस घर के घड़ों में पानी तक सूख जाता है।

—खबरदार, जो मुझे कुलच्छमी कहा तो।

—मेरे कहने न कहने से क्या होगा ? दुनिया जानती है।

—क्या जानती है ? तेरा सिर ?

—चुप कर जा, मां, क्यों बोलती है ? एक दिन जैसे-तैसे और काट ले। कल रात हम चले जाएंगे। चाचा रघुपत बोलते हुए उठते हैं और फिर बैठ जाते हैं।

—कल तो मंगलवार है, बेटा।

—कल नहीं तो परसों।

—मुझे क्या सुनाते हो ? मेरी तरफ से कल के जाते आज जाओ !

—ज्यादा बातें बनाने की जरूरत नहीं, भाभी।

—घर मेरा है, कोई मेरी जुबान नहीं पकड़ सकता !

बीरू देवी की गोद से उठकर चाचा के पास जाना चाहता है। देवी उसे खींचकर बिठा लेती है। वह फिर उठता है, देवी फिर उसे खींच लेती है। वह फिर उठता है और देवी उसे नहीं खींचती। उसका खेल खत्म हो जाता है। वह शायद चाचा की ओर जाना भूल जाता है। जब उसे और कुछ नहीं सूझता तो उसे प्यास लग जाती है।

—मैं पानी पीऊंगा।

—निराहार पानी पिएगा ? मरना चाहता है ? मां कहती है।

—मैं पानी पीऊंगा।

—यूं क्यों नहीं मर जाता ? सब मुझे तंग करने पर तुले हुए हैं।

—राम-राम !

दादी इन दो शब्दों का प्रयोग उस समय करती है जब उसे मां की कोई बात बहुत बेहूदा लगे। मां को इससे चिढ़ है।

—हां, हां, तुम तो यही चाहती हो कि वह मर जाए !

—राम-राम !

—ले ! देवी उसके लिए पानी ले आई है।

वह हाथ बढ़ाता है, लेकिन मां झपटकर गिलास छीन लेती है। छींटे उड़ते हैं और दादी फिर राम-राम करने लगती है।

—फिर मांगेगा पानी ? मां उसका हाथ मरोड़ देती है।

—पानी, पानी, पानी ! वह पूरे जोर से चिल्लाने लगता है, फिर मां का हाथ झटक कर भागता है और ठोकर खाकर गिर पड़ता है।

—फोड़ लिया माथा ? कहां चोट लगी है ?

और मां उसे छाती से लगा लेती है। उसकी प्यास मिट जाती

—है। सब लोग अपनी-अपनी जगह पर करवट बदलकर बैठ जाते हैं। अंधेरा फिर छा जाता है, धुआं फिर ऐंठने लगता है।

गांव के लिए रवाना होने से पहले दादी उसे बहुत प्यार करती है, बहुत आशीर्वाद देती है, चूम-चूमकर उसका सारा माथा गीला कर देती है। और फिर अचानक रोने लगती है। उसे रोते देखकर वह भी रो पड़ता है।

दादी के चले जाने से ड्योढ़ी खाली-खाली दिखाई दे रही है। उसकी फटी-फटी दीवारें अजीब सी लग रही हैं। मां ड्योढ़ी में धूप जला देती है। कहती है कि दस दिन लगातार धूप जलाएगी, तब कहीं जाकर बदबू दूर होगी।

बीरू दादी की चारपाई में पड़ा दादी को याद कर रहा है। देवी उसके पास आ बैठती है। उसे उस गांव की बातें सुनाने के लिए, जहां दादी गई है। सुनते-सुनते कुछ देर के लिए वह भूल जाता है कि ये बातें उसे क्यों सुनाई जा रही हैं। और उसके आंसू रुक जाते हैं। लेकिन किसी बात से न जाने क्यों उसके नन्हें से दिल पर ऐसी चोट लगती है कि वह फूट-फूटकर रोने लगता है। देवी समझ नहीं पाती कि उसे कैसे चुप कराए।

—दादी चाची के घर गई है। चाची के दो बच्चे हैं, एक लड़का, एक लड़की। उनके नाम बताऊं ?

वह हां या न में सिर नहीं हिलाता। मरजी हो तो बताओ। मैं इस समय दादी को याद कर रहा हूं। न जाने देवी क्यों यह सारा किस्सा ले बैठी है।

—लड़के का नाम है राम और लड़की का शल्लो। दोनों तुमसे छोटे हैं।

दोनों मुझसे छोटे कैसे हो सकते हैं ?

—चाची उन्हें बहुत प्यार करती है !

प्यार शब्द में कुछ ऐसा है कि उसकी आंखें फिर भीग जाती हैं।

—राम पक्की में पढ़ता है, शल्लो कच्ची में। दोनों एक साथ स्कूल जाते हैं। वहां गांव में एक छोटा सा स्कूल है। एक बार मैं भी उनके साथ गई थी। लेकिन मैं अंदर नहीं गई।

वह कुछ पूछना चाहता है, लेकिन फिर कुछ सोचकर चुप ही रहता है।

—देखो, बीरू, मुझसे नहीं बोलोगे तो मैं भी चाची के पास चली जाऊंगी।

—चली जाओ ! वह गुस्से में कहता है।

देवी उसे अपनी बांहों में भींच लेती है। पहले वह कुछ

तिलमिलाता है, फिर उसके शरीर में एक अनजानी राहत फैलने लगती है और वह अपने आपको ढीला छोड़कर देवी की गोद में पड़ा रहता है। एक क्षण के लिए दादी की याद उसके मन से उतर जाती है और वह भूल जाता है कि अभी थोड़ी ही देर में दादी की गाड़ी की आवाज उसे सुनाई देगी।

—चाचा के घर में एक बिल्ली है, उसका रंग काला है। रात को उसे देखो तो बहुत डर लगता है। राम उसकी पूंछ पकड़कर घसीटता है और वह करती है, म्याऊं ! शल्लो उससे बहुत डरती है।

इस म्याऊं-म्याऊं पर उसे मुस्कराना ही पड़ता है। जब से देवी आई है, आज पहली बार इस तरह बैठकर ऐसी प्यारी-प्यारी बातें कर रही है। अगर कुछ देर के लिए रोज देवी उसे इसी किस्म की बातें सुनाती रही तो वह दादी को शायद कभी भूले से भी याद न करे।

—वहां उनके आंगन में बेर का एक पेड़ है। बहुत मीठे-मीठे बेर लगते हैं उसमें। खाओगे ? मैं चाची को लिखूंगी, तुम्हारे लिए लिफाफे में डालकर भेज दे।

लिफाफे में क्या खाक बेर आएंगे ! यह देवी मुझे इतना बुद्धू क्यों समझती है ?

—वहां गांव में सारे मकान कच्चे हैं, लेकिन चाचा का मकान पक्का है। उनके घर आटे की बोरियां ही बोरियां भरी रहती हैं। कभी लड़ाई नहीं होती। चाची हमेशा हंसती रहती है। बच्चे कभी रोते ही नहीं। उनके घर में ऊंची आवाज तक नहीं उठती।

मन ही मन बीरू अपने घर का मुकाबला चाचा के घर से करता रहता है।

—और क्या होता है चाचा के घर में ?

—तुम दोनों का सिर !

मां उनके सिर पर खड़ी चिनगारियां बरसा रही है। वह जाने कहां से टपक पड़ी। बीरू और देवी सहम जाते हैं।

4

मां मिनट-मिनट बाद उठती है। ड्योढ़ी का दरवाजा खोलती है, एक दो बार इधर उधर झांककर दरवाजा फिर बंद कर देती है और उसके सिरहाने आ बैठती है।

—सो गया तू ?

वह चुप रहता है। पास ही देवी सोई हुई है।

देवी को नींद बहुत प्यारी है। यूं ही बैठे-बैठे, बातें करते- करते, सो जाती है।

मां उसके गाल सहलाना शुरू कर देती है। मां के खुरदरे हाथों से प्याज और मिट्टी के तेल की बू आती है। वह नाक के बजाय मुंह से सांस लेने लगता है।

—तू सोया नहीं अभी ?

वह कुछ जवाब नहीं देता।

—क्या हो रहा है तुझे ? सो क्यों नहीं जाता ?

—नींद नहीं आ रही।

—नींद कैसे आए ? तुझे खुश्की हो गई है। घी भी नहीं है घर में। मालिश कैसे करूं ? खुरक हो रही है ?

—हां।

मां उसका सिर खुजाने लगती है। फिर अचानक उसका हाथ रुक जाता है।

—यहां क्या हुआ तुझे ?

—यूंही खेलते-खेलते गिर पड़ा था।

—किसी ने मारा तो नहीं ? सच-सच क्यों नहीं बताता ?

वह कैसे बताए कि मास्टरजी ने छड़ी मारी थी, जिससे बचने के लिए वह दुबक गया था और छड़ी उसके सिर पर जा लगी थी।

—बता ना, किसी ने मारा तो नहीं ?

—नहीं मां ! यूं ही खेलते-खेलते ठोकर लग गई थी।

—तुझे कितनी बार कहा है कि ध्यान से खेला कर। अगर तुझे कुछ हो गया तो मैं क्या करूंगी ? तू अपना खयाल...

मां बोलती चली जाती है, वह सटकर मां के साथ लग जाता है। मां के कपड़े भीगे भीगे से हैं, लेकिन उसे अब उनसे बू नहीं आती।

मां ने खुजलाना बंद कर दिया है।

—मैं इतनी सी थी, जब मेरा ब्याह हो गया था। वह दिन और यह दिन, एक सांस भी तो चैन की नहीं मिली मुझे। पिताजी कहा करते थे कि फेरों के वक्त मुझे इतनी नींद आ गई थी कि सब लोग मुझे जगाने में लगे रहे थे। मेरी उमर ही क्या थी ! गुड्डियां पटोलों की उमर।

उफ ! मां की यह बेसिर-पैर की बातें। एक लाहौर की तो दूसरी पेशावर की।

—उस छोटी उमर में मैंने क्या-क्या नहीं देखा, बेटा। तेरी दादी मुझे दो-दो दिन खाने को कुछ नहीं देती थी। अंधेरी कोठरी में बंद कर दिया करती थी। कहती, तुझे अकल नहीं है। अब भला मुझे अकल होती भी कैसे, मेरी उमर ही क्या थी...

दादी को गए कई महीने हो गए हैं, लेकिन मां के दिल की आग अभी तक नहीं बुझी।

—मेरे साथ की लड़कियां मौजें उड़ा रही थीं और मुझे बरतन मांजने से ही छुट्टी नहीं मिलती थी। सर्दियों में मेरे छोटे-छोटे हाथ मारे ठंड के अकड़ जाते थे।

कई बार थक टूटकर चारपाई पर लेटने की सोच ही रही होती कि हुक्म मिलता कि उठकर तेरी दादी के पांव दबाऊं। दबाते-दबाते अगर ऊंघ गई तो बस शामत आ जाती थी।

मां, यह क्या किस्सा ले बैठी है। चुप करके सो जा।

—तेरे बाबा उन दिनों बहुत छोटे थे। स्कूल में पढ़ते थे। स्कूल दूसरे गांव में था। मैं उन्हें अपना बड़ा भाई समझती थी। मेरा जी करता था कि मैं उनके साथ खेलूं, कूदूं...

वह बीच-बीच में यूं चुप हो जाती है, जैसे अपनी बातों या यादों में से कोई खास बात या याद ढूंढ रही हो।

—तेरे बाबा तेरे दादा के लिए शराब लाया करते थे और रास्ते में घूंट दो घूंट आप भी पी लिया करते थे। कभी-कभी रात को उनके ताश चुरा लाते और मुझे कहते, आओ खेलें। और अगर कभी तुम्हारी दादी को पता चल जाता तो बस मेरी शामत आ जाती।

बीरू हैरान है कि उसका यह किस्सा कब और कैसे खत्म हो। अब उसे हल्की सी नींद भी आने लगी है। बीरू को फिर उसके कपड़ों में से हल्दी, घी, तेल की बू आने लगती है। और मां की गोद से खिसककर वह चारपाई पर लेट जाता है। चारपाई बहुत ढीली है। उसे लगता है, जैसे वह किसी झूले में पड़ा हो।

—मैं उन्हें शराब पीने से मना करती तो तेरी दादी मुझे डांटने लगती। कहती, तू कौन होती है उसे मना करने वाली ?

मां कभी कोई ऐसी कहानी क्यों नहीं सुनाती जिसमें एक राजा हो, जिसकी सात रानियां हों...

—हर वक्त मेरा अंग-अंग दुखता रहता। अपनी मां की शह से वे और भी शेर हो जाते...

...राजा सबसे छोटी रानी को सबसे ज्यादा प्यार करता हो। छोटी रानी का नाम फूलरानी हो...

—मैं कभी बीमार पड़ जाती तो तेरी दादी कहती, फरेब कर रही है। दवाई तो दूर, मेरा हाल पूछनेवाला तक कोई नहीं था।

...एक दिन फूलरानी बीमार पड़ जाए, राजा रात भर करवटें बदलता रहे। उसे नींद न आए। दूसरे दिन राजा अपने वजीर को बुलाकर उससे कहे, देखो, इसी समय नगर में मुनादी करवा दो, डम डम डम...

—कई कई दिन ये घर न लौटते। मेरी जान हरदम खुश्क रहती। लेकिन तेरी दादी के डर के मारे किसी से बात करने की हिम्मत तक

न होती...

...मुनादी करवा दी जाए, डम डम डम...फूलरानी बीमार है। जो कोई उसे अच्छा कर देगा, राजा अपना आधा राजपाट उसे दे देगा...

—बेटा, मेरी जवानी तो इन्हीं चीजों में घुल गई। मैंने एक दिन भी तो सुख का मुंह नहीं देखा...

—मां, रोओ नहीं।

—मेरी किस्मत में सिवाय रोने के और कुछ लिखा ही नहीं। मेरी सारी उमर रोते-रोते गुजरी। मुझे कभी सुख नहीं मिला। मुझे कभी सुख नहीं मिलेगा।

—रोओ मत, मां ! मैं तुम्हें सुख दूंगा।

मां उसे चूम लेती है।

5

बाबा कई दिनों से घर में नहीं सोते। सुबह आते हैं और देवी को कुछ पैसे देकर उसी वक्त बाहर चले जाते हैं। मां से बात तक नहीं करते। जब से काका पैदा हुआ है मां सारा दिन बिस्तरे में पड़ी रहती है। वहीं पड़ी-पड़ी बड़बड़ाती रहती है, दांत पीसती रहती है और कभी कभी गुस्से में कोई चीज उठाकर फर्श पर दे मारती है।

काका हर समय मां के साथ लेटा रहता है। बीरू को बिलकुल अच्छा नहीं लगता। लाल लाल सा, जैसे चुहिया का बच्चा हो।

मां कितने दिन और इसी तरह पड़ी रहेगी ? उठती क्यों नहीं ? वैसे तो अच्छा ही है। उठकर भी कौन सी कमाई करेगी। न ही उठे

तो ठीक।

—मैं बीमार क्या पड़ी हूं, उन्हें खुली छुट्टी मिल गई है। कोई पूछने वाला जो नहीं रहा। रात को रोज चढ़ाते होंगे। और फिर न जाने कहां-कहां टक्करें मारते होंगे चढ़ाकर !

—क्या चढ़ाकर, मां ?

—शराब, और क्या ? मुझे तो शक है कि आजकल फिर जुआ जोरों पर है।

जुआ खेलने से अगर पैसे आते हैं तो इसमें बुराई क्या है ?

—एक दिन तू ही पीछा कर, बीरू, इनका।

पीछा करने के खयाल से बीरू को हंसी आ जाती है। बाबा जैसे चोर हों।

—हो न हो, उसी लंगड़े के घर चंडाल चौकड़ी जमती होगी।

यह लंगड़ा कौन है ? मां ने दुनिया भर के लोगों को अजीब अजीब नाम दे रखे हैं।

—बुरा हो बुरों का ! कोई भी तो उन्हें सीधे रास्ते पर चलने की सलाह नहीं देता। एक दिन पता तो लगा बेटा कि वे कहां जाते है।

—देवी कहां है, मां ?

—यहीं कहीं टक्करें मार रही होगी। इसके घर जा, उसके घर जा ! हमेशा गधों की तरह हिन हिन करती रहेगी। ऊंट जैसा कद हो गया है, लेकिन अकल इतनी सी भी नहीं।

बीरू सोचता है उसे देवी का नाम नहीं लेना चाहिए था।

—लोग तो सारा दोष मुझे ही देते हैं ना। कहते हैं, मैं उसे टोकती नहीं। हाय परमात्मा, मुझे शांति कब मिलेगी ?

मां को शांति कभी नहीं मिलेगी, कभी भी नहीं।

काका जाग गया है। मां उसे गोद में उठा लेती है।

—अब इस बेचारे को भूख लग रही है। मेरे अंदर कुछ हो तो इसे दूं।

मां अपनी कमीज उठाकर स्तन काके के मुंह से लगा देती है। काका एक दो बार मुंह मारकर फिर रूं रूं करने लगता है।

—मां, काका कहां से निकला था ?

—तेरे सिर में से !

मां को एकदम न जाने फिर क्या हो गया है।

—मां !

—बोल, बोलता क्यों नहीं ?

—मां, लड़के कहते हैं, काका तेरी मां के पेट में से निकला है।

—ऐसे लड़कों से बात नहीं करते।

—मां, वे कहते हैं, तू भी मां के पेट से निकला था।

—कहा न, ऐसे लड़कों से बात नहीं करते।

—वे कहते हैं, सारी दुनिया अपनी मां के पेट से निकलती है।

मां हंसने लगती है। मां को हंसता देख बीरू बहुत खुश होता है।

—मां, काका जहां से दूध पीता है, उसे क्या कहते हैं ?

—दूध और क्या ?

—लड़के तो इसे ममा कहते हैं।

—लड़के बहुत शैतान हैं। बहुत गंदी बातें करते हैं। ऐसे लड़कों से बात नहीं करते।

—गंदी बातें क्या होती हैं, मां ?

—मुझे नहीं पता। तुम अब बहुत चालाक हो गए हो। बहुत बातें बनाने लगे हो।

—मां, देवी का काका कब होगा ?

—ऐसा नहीं कहते।

—क्यों ?

—देवी का पहले ब्याह तो हो ले।

—तो क्या ब्याह के बगैर काका नहीं होता, मां ?

—पागल है !

तो लड़के सच ही कहते हैं, पहले ब्याह होता है, फिर काका। वह धीरे से मुसकरा देता है। बहुत चालाकी से उसने एक बहुत बड़ी बात का पता लगा लिया है।

—देवी का ब्याह कब होगा, मां ?

—भगवान जाने, होगा भी कि नहीं। बाप शराबी, जुआरी; बेटी बेहया, बेअकल। क्या पता, होगा भी कि नहीं। पास में एक पैसा नहीं। ब्याह मेरे सिर से होगा।

मां एक ठंडी आह छोड़ती हुई अपना सिर पकड़ लेती है।

उसी समय देवी दबे पांव अंदर आती है। अपने निचले होंठ को काटती हुई। एक अंगुली से बीरू को चुप रहने का इशारा करती हुई।

—देवी आ गई, मां।

—आ गई ? शुक्र है, आई तो ! अभी और टक्करें मारती !

देवी चुपचाप रसोई की ओर चलने लगती है।

—मैं पूछती हूं, कहां गई थी ?

—बाहर।

—क्या करने ? सिर मुंडाने ? तुझे शर्म नहीं आती ?

—मां, मुझे गाली मत दो।

—वाह ! क्या कहने ! वाह ! एक चोर दूसरा चतुर !

—सीधी तरह बात करो, मां !

—अच्छा, तेरी यह हिम्मत ! अब तू मुझे आंखें दिखाने लगी ?

—मैं अब दूध पीती बच्ची नहीं, मां।

—अरी, तू दूध पीती बच्ची होती तो मैं तेरा गला न घोंट देती। अब यह जंग न जाने कितनी देर तक चलेगी।

—जुबान संभालकर बात करो, मां !

—कुतिया, कमीनी, बेगैरत, मर जा तू !

—अच्छा, बकती रह, मां, बकती रह।

—तू मेरी लड़की थोड़े ही है। तू तो मेरी सौत है, सौत !

—कुछ तो शर्म करो, मां।

ऐसे तो कुत्ते भी नहीं लड़ते आपस में। उनकी तकरार सुनते सुनते बीरू की नसें तन जाती हैं। उसे लगता है जैसे उसका सिर फटा जा रहा है। अंदर से एक उबाल सा उठता है। और वह चीखकर कहता है—चुप करो !

देवी और मां उसकी ओर यूं देखती हैं जैसे पहले कभी न देखा हो।

6

बीरू दबे पांव बाबा के पीछे चल रहा है। बाबा इतने आहिस्ता चलते हैं कि बार-बार उसे रुक जाना पड़ता है। आज वह पता लगाकर छोड़ेगा कि बाबा कहां जाते हैं। उसने बहराम डाकू की कहानी सुन रखी है।

बाबा एक मकान के सामने पहुंचकर रुक जाते हैं। दरवाजा अंदर से बंद दिखाई देता है। बाबा बनावटी तौर पर खांसते हैं, फिर ऊपर की ओर देखते हैं, और फिर खांसते हैं। दरवाजा खुलता है। बाबा अंदर घुस जाते हैं। दरवाजा अपने आप बंद हो जाता है। बीरू

दौड़कर दरवाजे के पास पहुंचता है और उसे धकेलकर लौट आता है। दरवाजा अंदर से बंद कर लिया गया है। यह मकान न जाने किसका है।

वह दीवार के सहारे खड़ा हो जाता है। और ऊपर से आ रही आवाजों को सुनने की कोशिश करता है, लेकिन उसे साफ साफ कुछ सुनाई नहीं देता।

अचानक वह घबरा कर चिल्लाने लगता है—बाबाजी ! बाबाजी ! बाबाजी !

फिर वह दरवाजा खटखटाने लगता है।

दरवाजा खुलता है।

—कौन हो तुम ? क्या बात है ?

और वह उस आदमी को धकेलकर अंधाधुंध सीढ़ियां चढ़ जाता है, जैसे वह पहले भी कई बार अंधेरे में उन सीढ़ियों पर चढ़ चुका हो।

—तू यहां कैसे चला आया, बीरू ?

—तो यह शहजादे साहब तुम्हारे हैं ?

वह उस आदमी की ओर देखता है जिसने उसे बीरू से शहजादा बना दिया है।

—जी हां। आपको कोई एतराज है ? बाबा हाथ में पकड़े हुए गिलास में से आखिरी चुस्की लेकर उठने लगते हैं।

—बैठो यार, अभी कहां जाते हो !

—मैं इसे घर छोड़कर फिर आ जाऊंगा।

—यह खुद चला जाएगा। तुम एक बार घर जाकर फिर वहां से नहीं लौटोगे, हम जानते हैं। यहीं अपने पास बिठा लो ना, पैसों से खेलता रहेगा।

बाबा एक हाथ उसकी पीठ पर रख देते हैं और दूसरे से अपना गिलास उठाकर उसे फिर मुंह से लगा कर पेशाबी रंग के पीले पानी को गट-गट पी जाते हैं।

—बांटूं पत्ते ?

—हां।

बाबा के चेहरे का कसा हुआ मुक्का आहिस्ते-आहिस्ते खुलने लगता है। उनके सामने पैसों का बड़ा सा ढेर लगा हुआ है और उनके पांवों के नीचे नोटों की एक गड्डी दबी पड़ी है। एक झपट्टा मारकर अगर वह वे सारे नोट ले ले और भाग जाए और जाकर मां के ऊपर उन नोटों की वर्षा कर दे, तो...तो मां हंस पड़े। उसके सारे दुख दूर हो जाएं। वह कहने लगेगी, बेटा ! मुझे तू ही सुख दे सकता था, सो दे दिया।

—पैसे लोगे ?

बाबा मुट्ठी भर रेजगारी उसकी जेब में डाल देते हैं। जेब पैसों के बोझ से लटक जाती है और वह मां को भूल जाता है।

उनके हाथ में तीन पत्ते हैं। वह अपने पास पड़े पैसों के ढेर में से पैसे उठाकर फेंकते जाते हैं। ढेर घटता जाता है। आखिर बिलकुल खत्म हो जाता है। उनका हाथ अब बीरू की जेब की ओर बढ़ता है। उनकी आंखें अपने पत्तों पर जमी हुई हैं। बीरू अपनी जेब को दबोच लेता है तो वह उसके हाथ को झटककर उसकी जेब में से सारे पैसे निकालकर बीच में फेंक देते हैं और कहते हैं, दिखाओ।

उनके सामने बैठा आदमी पत्ते खोल देता है और बीच में पड़े सारे पैसे समेटकर उठाने लगता है। बाबा अपने पत्ते फेंककर गिलास उठाकर मुंह से लगा लेते हैं और उनका मुंह फिर कसे हुए मुक्के सा दिखाई देने लगता है।
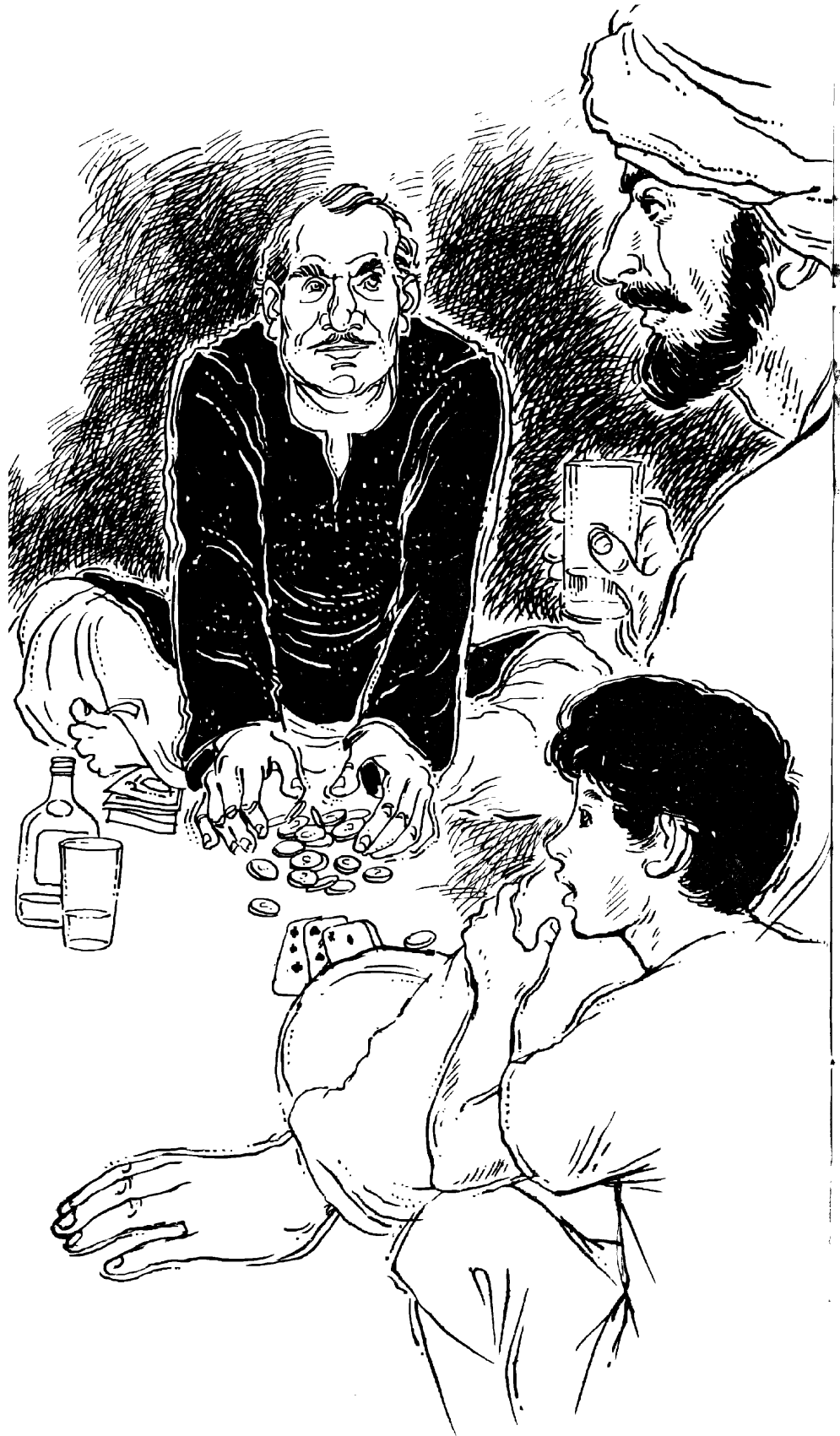
—मैं घर जाऊंगा।

—अभी चलेंगे, बेटा।

—अभी चलो ना।

—थोड़ी देर और बैठो। अभी चलेंगे।

—मां...

—बस, अब चुप करके बैठे रहो !

खेल फिर शुरू हो जाता है। थोड़ी ही देर में बाबा के सामने फिर पैसों का ढेर लग जाता है। इतने नोट हैं कि अगर मां को मिल जाएं तो वह खुशी के मारे पागल हो जाए।

—अच्छा, अब मैं चलता हूं।

—यह कौन सा कायदा है, जनाब ? एक हाथ अच्छा पड़ा और जनाब उठकर चल दिए ! बैठो, अभी जल्दी कौन सी है। इसे कुछ खाने को दे दो। पकौड़े पड़े होंगे।

—इसे नींद आ रही है।

—नींद आ रही है तो सो जाए। घर में कौन सा मखमल का बिछौना मिलेगा इसे ! अपनी गोद में इसका सिर डाल लो और इसे कहो सो जाए।

बाबा उसकी जेब में फिर कुछ पैसे डाल देते हैं। खेल फिर शुरू हो जाता है। कुछ देर बाद बीरू फिर घबराना शुरू कर देता है।

—बाबा, अब चलो न।

—अभी चलते हैं बेटा।

घर में तो कभी बाबा ने उसे बेटा कहकर नहीं बुलाया। हर वक्त उनका पारा चढ़ा ही रहता है। और यहां तो ऐसा मीठा बोल रहे हैं कि...

—अरे यार, मैं कहता हूं, इस लड़के को कहीं सुला दो ना !

—तुम अपनी चाल चलो। लड़का तुम्हें तो कुछ कहता नहीं।

कुछ देर बाद बीरू देखता है कि बाबा के पांवों तले एक नोट भी नहीं और उनका चेहरा लटका हुआ है, ऐसे कि ठुड्डी अभी टूटकर नीचे गिर पड़ेगी। जब उनका चेहरा ऐसे लटक जाए तो समझो कोई आफत आने वाली है।

—पासा पलट गया है।

—हां।

—एक दो हाथ और ?

—बस, अब और क्या रह गया है ?

—अब तो चलो, बाबा।

—हां, अब चलना ही चाहिए।

तभी नीचे से किसी के दरवाजा खटखटाने की आवाज आती है। बाबा खट से खड़े हो जाते हैं।

—कौन है ?

—खोलो दरवाजा, अभी बताती हूं, कौन है !

सब बाबा की ओर देखते हैं।

—आप ही की सरकार हैं ! खोलिए जाकर दरवाजा।

बीरू ने मां की आवाज पहचान ली है। वह बाबा का हाथ पकड़कर उन्हें सीढ़ियों की ओर घसीटने लगता है। बाबा हाथ छुड़ाकर खिड़की की ओर बढ़ते हैं। बाहर झांककर चिल्लाते हैं—चली जाओ चुपचाप, नहीं तो हड्डी पसली एक कर दूंगा !

—नहीं जाती ! आज मैंने सबको तमाशा न दिखाया तो मेरा नाम बदल देना ! नीचे से मां की आवाज आती है।

—मां, मैं भी यहां हूं। तुम चलो, मैं बाबा को लेकर घर आता हूं।

—अच्छा, तो तुम भी यहीं हो ! जैसा बाप, वैसा बेटा ! खोलो दरवाजा, नहीं तो मैं तोड़कर रख दूंगी !

—अरे बाबा, खोल दो, नहीं तो सारा शहर इकट्ठा हो जाएगा। कुछ क्षण बीत जाते हैं। नीचे दरवाजे पर मां ईंटें मार रही है।

बाबा धम-धम करते नीचे उतर आते हैं। बीरू खिड़की से सिर निकालकर नीचे की ओर देखने लगता है। कुछ दिखाई नहीं देता। जहां मां खड़ी है, वहां अंधेरा और गहरा हो गया है। दरवाजा खुलने की आवाज आती है और साथ ही फटाक-फटाक की आवाजें। बाबा मां की टांगें तोड़ने की कोशिश कर रहे हैं।

एक क्षण के लिए बीरू भूल जाता है कि वह कहां खड़ा है। उसे लगता है, जैसे वह दंगल उसके अपने घर में ही हो रहा हो और ये चोटें उसकी अपनी पीठ पर ही पड़ रहीं हों।

7

मां के पास लंबे दांतोंवाली जलालपुरनी बैठी है। दादी के चले जाने के बाद इन दोनों में फिर सुलह हो गई है।

—बहन लड़कियां हर किसी के घर होती हैं। तेरी लड़की, सो मेरी लड़की। मुझे उससे कोई बैर नहीं है। है कि नहीं ?

—क्यों नहीं, बहन ! तू जो कहती है, सोलह आने ठीक है।

—लेकिन लोगों का मुंह नहीं पकड़ा जाता, बहन। है कि नहीं ?

—तुम बिलकुल सच कहती हो।

—मेरी मानो तो जल्दी से जल्दी, जैसे भी हो, कोई लड़का ढूंढकर इसे ठिकाने लगा दो।

—हाय, मैं भी तो यही चाहती हूं। कोई मिले भी तो !

—तू बहुत भोली है, बहन। तू नहीं जानती कि क्या हो रहा है। सिर से पानी निकल गया तो कहीं की न रहेगी। चादर को एक बार दाग लग गया तो किसी को मुंह दिखाने...

—हाय बहन, तू ही बता, मैं करूं तो क्या ? मेरी कोई सुने भी !

—बता तो रही हूं, इसका बंदोबस्त कर दो, नहीं तो लड़की हाथ से निकल जाएगी।

—कहां करूं, कैसे करूं ?

—लोग ऐसी-ऐसी बातें कर रहे हैं कि तू सुने तो हैरान रह जाए।

—तू ठीक कहती है, बहन, लेकिन...

—औलाद को जब तक मां बाप का डर रहता है, सब ठीक चलता है। तेरी लड़की इतनी नदीदी हो गई है, इतनी नदीदी हो गई है कि परमात्मा बचाए।

—बिलकुल सच है।

—तो बहन, फिर इसे काबू में रखना तुम्हारा काम है।

—हाय, मैं क्या करूं ?

—तू चाहे तो सब कुछ कर सकती है, बहन।

जलालपुरनी के दांत अब बीरू को इतने लंबे नजर आने लगते हैं कि उसका मन होता है कि वह उन दांतों को पकड़ ले और जलालपुरनी को घसीटता हुआ बाहर गली में ले जाए। और बेढब ऊबड़ खाबड़ ऊंटनी जलालपुरनी बिलख उठे।

—जा, जाकर देवी सड़ेवी को बुला ला।

—इसके कहे से वह आएगी भी ?

—जा, जाकर बालों से पकड़कर उसे घसीट ला।

मां ने जलालपुरनी की दी हुई नसीहतों पर अभी से अमल करने

का फैसला कर लिया है। जलालपुरनी अपने निचले ओंठ पर अंगुली रखे मुस्करा रही है। शायद अपनी सफलता पर खुश हो रही है।

—नहीं मां, मुझसे यह नहीं होगा।

—क्या कहा ?

—तुम खुद बुला लाओ उसे।

—देखा, बहन, अब उसकी देखा देखी यह निगोड़ा भी मुझे आंखें दिखाने लगा है।

—यह तो होगा ही। जैसे वह करेगी ...

जलालपुरनी की बात पूरी सुने बगैर बीरू उठ खड़ा होता है।

—तो बुलाकर ला रहा है ना उसे ?

—नहीं।

बीरू दौड़कर गली में पहुंच जाता है। गली खाली पड़ी है। पारो का मकान दूसरे सिरे पर है। गली के बीचोंबीच धूप बिछी हुई है। उसके पांव जल रहे हैं। पारो के घर पहुंचते-पहुंचते उसका गला भर आता है। पारो के घर का दरवाजा बंद है।

बीरू सोचता है कि देवी को वहीं से आवाज लगाए या आगे बढ़कर दरवाजा खटखटाए। आवाज के जवाब में देवी कभी बाहर नहीं आएगी। सुनेगी ही नहीं। वह जब अपनी बातों में मस्त हो तो उसे किसी की आवाज सुनाई नहीं देती। हो सकता है, वह सो रही हो।

इसी सोच में डूबा-डूबा वह दरवाजा खटखटाने लगता है। कुछ देर बाद दरवाजा खुलता है। सामने पारो खड़ी है।

—देवी कहां है ? बीरू बहुत रुखाई से पूछता है।

—कौन सी देवी ? पारो उसे छेड़ती है।

—हमारी देवी !और कौन ? बीरू को यह छेड़ छाड़ अच्छी नहीं लगती।
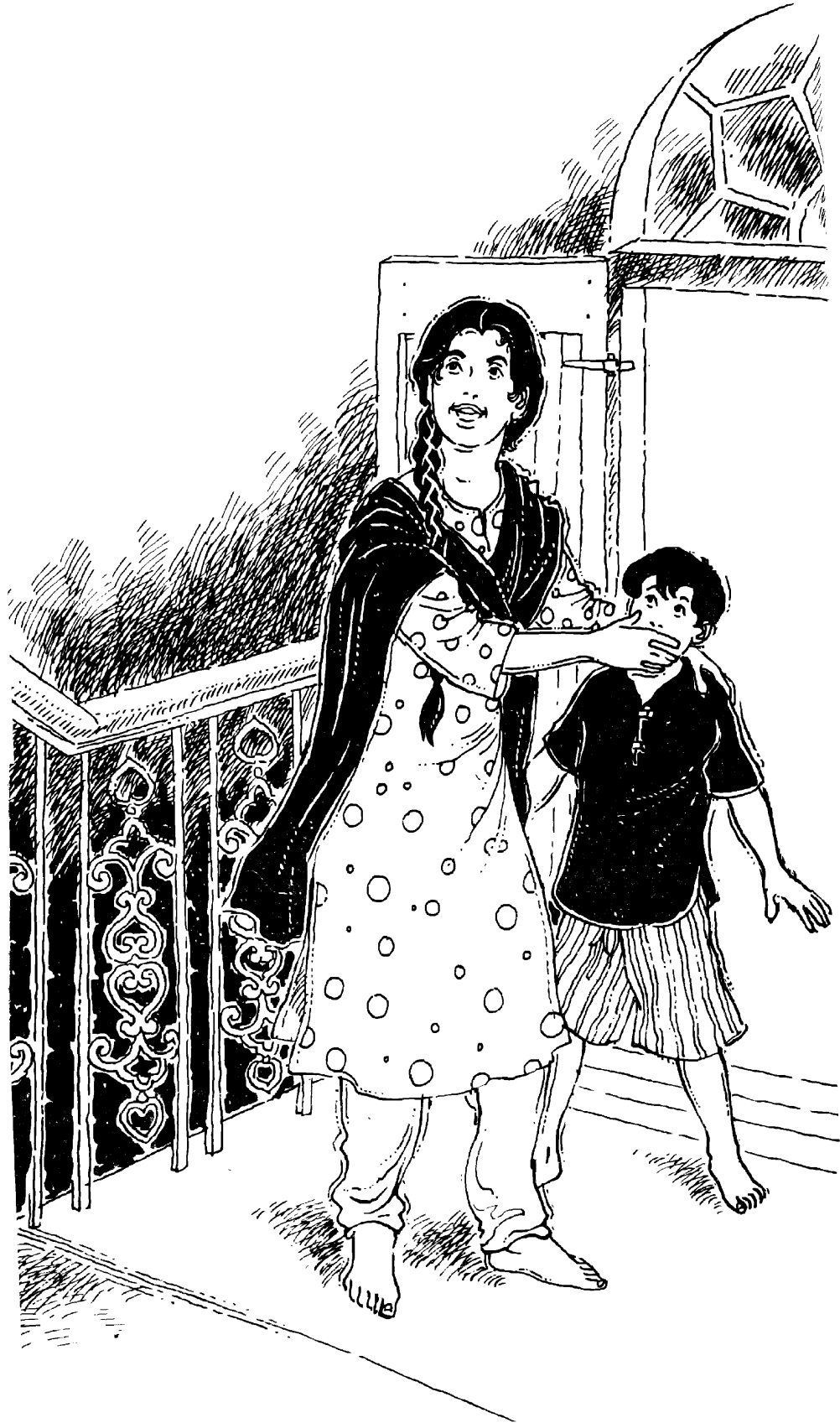
—मेरी जेब में ! और पारो अपनी जेब दिखाने लगती है।

बीरू को हंसी नहीं आती।

—मैं देवी को बुलाने आया हूं।

—बाबा, कहा तो है, अंदर मेरी कमीज की जेब में पड़ी है, लोगे ? आओ, दूं !

लेकिन उसे अब भी हंसी नहीं आती

—बड़े जिद्दी हो। नहीं आओगे ? कर लूं दरवाजा बंद ? बोलो ! कर लूं बंद ? फिर बाहर धूप में खड़े रहना, अच्छा !

वह कुछ नहीं बोलता।

—तीन तक गिनूंगी। आना है तो आ जाओ, नहीं तो दरवाजा बंद कर लूंगी।

उसका गला कांटेदार गोलों से अट जाता है।

पारो हाथ से पकड़कर उसे अंदर खींचती है।

—हमारा काका भी अंदर है ?

—वह तो हमारा काका है। लेकिन है अंदर ही।

क्या बच्चों की सी बात कर रही है !

देवी को आवाज देने के लिए वह मुंह खोलता ही है कि पारो उसके मुंह पर हाथ रख देती है। पारो के हाथ से आ रही पसीने की बू उसे अच्छी लगती है। वह उसके साथ अंदर चला जाता है।

—अम्मा, यह देखो, कौन आया है हमारे घर ?

—कौन है ! बीरू ! आओ, बेटा।

पारो की मां के मुंह में एक भी दांत नहीं। बीरू को फिर दादी की याद आ जाती है।

—बैठ जा, बीरू ! बोल, क्या खाएगा ?

—कुछ नहीं।

—वह क्या होता है ? बोल, बर्फी खाएगा ?

—नहीं।

—पेड़ा ?

—देवी, घर चल, मां बुला रही है। अभी चल।

—क्या करूं घर जाकर ?

देवी के इस सवाल में जो खीझ है, उससे बीरू चुप हो जाता है, मानो वह स्वयं यही सवाल अपने आपसे पूछ रहा हो।

बीरू देवी की ओर देखता है, जैसे आधे मन से उसे घर चलने के लिए कह रहा हो। फिर पारो के पास बैठकर काके को हंसाने के लिए पारो की रानों को थपथपाने लगता है। पारो उसके गालों पर हल्की हल्की चपतें मार रही है और कह रही है—अरे भइया रे, हौले मार, मांस है, पत्थर तो नहीं। बीरू को बहुत मजा आ रहा है।

—अच्छा तो मैं अब चलती हूं, पारो।

—शाम को फिर आना।

—देखूंगी।

—देखूंगी नहीं, बस, थोड़ी देर के लिए आ ही जाना। बाकी बात फिर करेंगे।

8

—अच्छी तरह कान खोलकर सुन लो ! इस रोज-रोज की बक-बक से मैं इतना तंग आ गया हूं कि अगर तुमने अपना चलन नहीं बदला तो मैं सब कुछ छोड़कर कहीं चला जाऊंगा ! समझी ?

फर्श पर औंधे मुंह गिरी मां सिसक रही है। उसके बालों की

एक रस्सी सी बन गई है। बाबा ने उन्हें इतना मरोड़ा था कि मां बिलबिला उठी थी।

मां ने एक बार बीरू को बताया था कि बाबा जवानी में रामलीला में कभी रावण बना करते थे और कभी अंगद।

आज सुबह सवेरे ही यह संग्राम न जाने किस बात पर छिड़ गया है। रात बाबा बहुत देर से लौटे थे। वह उनका इंतजार करता-करता रसोई में ही सो गया था। सोने से पहले मां ने उसे कई कहानियां सुनाई थीं।

—एक बार तो, बेटा, इन्होंने मुझे भी दांव पर लगा दिया था। अब कभी वे दिन याद आ जाते हैं तो हंस देती हूं। पांडवों ने भी तो द्रौपदी को हार दिया था। लेकिन वह तो सब भगवान की लीला थी। और यह सब उस बेईमान रामचरण की शरारत। रामचरण बाबा का दोस्त था।

—एक दिन वह सब कुछ हारकर उठने लगे तो उस बेईमान रामचरण ने कह दिया, क्यों नहीं एक हाथ और खेल लेते ? अपनी बीवी को लगा दो न दांव पर ! अब उसने बेशक मजाक से ही कहा हो। लेकिन ये नशे में धुत्त, मान गए। बस फिर क्या था, दूसरे दिन यह बात सारे गांव में फैल गई। बच्चा-बच्चा जान गया। हाय बेटा, तुम्हें क्या क्या बताऊं ! मैंने क्या नहीं देखा !

मां अब भी फर्श पर औंधे मुंह पड़ी है पर उसकी सिसकियां शायद बंद हो गई हैं।

—चुप कर जाओ, मां ! बीरू मां के पास खड़ा है।

—चुप कर जाओ, मां ! देवी कहती है।

मां उठकर दीवार से टक्करें मारने लगती है। वे दोनों उसे पकड़ लेते हैं। मां शायद पागल हो गई है। ड्योढ़ी का दरवाजा खुला है।

बीरू के दो साथी दरवाजे में खड़े सब कुछ देख रहे हैं।

—स्कूल नहीं जाओगे, बीरू ?

लेकिन उनकी आवाज बीरू के कानों में नहीं पड़ती।

—आज स्कूल नहीं जाओगे, बीरू ? देर हो रही है।

—ठहरो, मैं अभी आता हूं।

बीरू दौड़कर अंदर जाता है और किसी कपड़े से मुंह पोंछ, बस्ता उठाकर बाहर चला जाता है।

—तेरी मां को क्या हुआ था, बीरू ?

—हम तो कितनी देर से खड़े आवाजें दे रहे थे।

—जब तेरे बाबा ने दरवाजा खोला तो हम तो डर के मारे उछलकर परे जा खड़े हुए। तुझे अपने बाबा से डर नहीं लगता, बीरू ?

—हमें देख लेते तो हमारी खैर नहीं थी।

—यार बीरू, तेरे घर हर रोज लड़ाई क्यों होती रहती है ?

—मेरी मां कहती है, सारा कसूर बीरू की मां का है।

—मेरी मां कहती है, कसूर दोनों का है।

—मेरी मां कहती है, बीरू की बहन देवी भी बीरू की मां को बहुत तंग करती है।

—मेरी मां कहती है, बीरू की मां बहुत लड़ाकी है।

—यार बीरू आज हमसे बोलोगे नहीं ?

—छोड़ो, बेचारे को रोना आ रहा है।

—अंधे हो ? किस हरामी को रोना आ रहा है ?

—आखिर बुलवा ही लिया न !

—अच्छा, बीरू, अब तो बता दे, तुम्हारी मां क्यों रो रही थी ?

—आज तो पूछकर ही छोड़ेंगे।

—क्या तुम्हारी मां कभी नहीं रोती ?

—रोती है, लेकिन कभी-कभी।

—लेकिन बीरू की मां तो हरदम रोती रहती है।

स्कूल के बड़े दरवाजे के बाहर रुककर बीरू अपने साथियों से कहता है—देखो, केशव के बच्चे, किसी को बताना नहीं। अगर बताया तो आज से मेरी तुम्हारी बोलचाल बंद !

—हम तो बताएंगे, हम तो सबको बताएंगे, हम तो मास्टर को भी बताएंगे, बोर्ड पर लिख देंगे ! क्यों न बताएं ? क्यों न बताएं ?

—अच्छा, फिर बताकर देख लेना !

—देख लेंगे !

वे दोनों गेट की ओर चल देते हैं। अगर इन कमबख्तों ने बात फैला दी तो सब लड़के दिन भर मुझे छेड़ते रहेंगे। केशव शायद न बताए, जीता जरूर बता देगा।

क्लास में मास्टर जी उसे अपनी ओर खींचकर पूछते हैं—किताब लाया है या नहीं ?

मास्टर ने यह किताब का किस्सा क्यों छेड़ दिया ?

—बोल, किताब लाया है कि नहीं ?

बोलना क्या जरूरी है ? नहीं लाया। लेकिन मास्टर बिना बुलवाए नहीं छोड़ेंगे ! बुलवाने ही में तो सारा मजा है !

—बोल, सूअर की औलाद ! जुबान हिला ! बोल, किताब लाया है कि नहीं ?

बीरू दुआ मांग रहा है कि मास्टर का हुक्का किसी तरह उसी वक्त आ जाए तो शायद उसकी खलासी हो।

—बोलेगा कि और कोई तरकीब करूं बुलवाने की ? बोल, किताब लाया है कि नहीं ?

एक लड़का उठकर कहता है—मास्टरजी, इसके बस्ते में किताब

नहीं है।

उस लड़के ने शायद यह सोचा हो कि मास्टर अब बीरू को छोड़ देंगे।

—अच्छा, तो आज भी नहीं लाया ?

'भी' पर बल देने के लिए मास्टर बीरू की गर्दन को पूरे जोर से कस लेते हैं। बीरू चिल्ला उठता है।

—अब निकली आवाज ! तुझे कल क्या कहा था ? याद है कि नहीं ? मैं पूछ रहा हूं, याद है कि नहीं ?

बीरू को तो क्या, उसके फरिश्तों को भी इस समय कुछ याद नहीं।

—मास्टरजी, बेचारे की जान निकल जाएगी। वही लड़का फिर उठकर कहता है।

—बड़ी हमदर्दी है तुम्हें इससे तो फिर आ जाओ न इसकी जगह पर !

मास्टर बीरू को छोड़कर उस लड़के को पास आने के लिए इशारा करते हैं।

मास्टर देखने को तो हंस रहे हैं, लेकिन उनके गुस्से का अनुमान सभी लड़कों ने ठीक-ठीक लगा लिया है। वे सब असलम की ओर देख रहे हैं। असलम अपनी जगह पर डटा हुआ है, मास्टर की नजर से नजर बंधा खड़ा है।

बीरू के पांव अब कुछ जम गए हैं। लेकिन उसकी गर्दन का बल अभी दूर नहीं हुआ। उसे सीधा करने की कोशिश में मास्टर और असलम के बीच की तनातनी का पूरा-पूरा आभास उसे नहीं होता। कुछ लड़के उसकी ओर हैरानी से देख रहे हैं, जैसे पूछ रहे हों, क्या अभी तक जिंदा हो ?

—तो क्या तुम वहीं खड़े रहोगे ?

मास्टर की झड़कीली आवाज सुनते ही सबके दिल दहल जाते हैं।

—असलम !

मास्टर असलम का नाम इतने जोर से पुकारते हैं कि एक बार तो असलम के पांव भी उखड़ जाते हैं।

मास्टर के पास पहुंचकर असलम फिर तनकर खड़ा हो जाता है, मानो अपनी जगह से वहां तक पहुंचते-पहुंचते उसने कोई नया फैसला कर लिया हो।

—हां, तो वकील साहब !

और मास्टर छूटते ही एक झन्नाटे का तमाचा असलम के मुंह पर दे मारते हैं।

असलम चुपचाप, अलिफ की तरह सीधा खड़ा रहता है।

मास्टर असलम की ओर देखते हैं, लड़कों की ओर देखते हैं, अपने हाथ की ओर देखते हैं और फिर पागल हो जाते हैं और अंधाधुंध दोनों हाथों से असलम पर पिल पड़ते हैं। और इस पर भी जब असलम रोता चिल्लाता नहीं, तो वह दोनों हाथों से उसके कंधों को झिंझोड़कर उसकी गर्दन दबोचने की कोशिश करते हैं। असलम चुपके से उनके कंधों को परे झटक देता है, मानो कोई पहलवान दूसरे पहलवान से कह रहा हो—कायदे से लड़ो, ओछापन क्यों करते हो ?

मास्टर के मुंह से झाग छूट रहा है। गाली देने के लिए मुंह खोलते हैं तो मुंह खुला रह जाता है। असलम सीना ताने अपनी जगह पर लौट आता है। लड़कों की सांसें तेज-तेज चल रही हैं। सभी लड़के असलम की ओर देख रहे हैं। बीरू का जी चाहता है कि उठकर उसके पास जा बैठे।

—हुक्का कहां है ? मास्टर उन लड़कों से पूछते हैं जो बहुत देर से दरवाजे में खड़े सारा नजारा देख रहे हैं।

—मास्टरनीजी ने कहा है, हुक्का तो ले जाओ, लेकिन तंबाकू की जगह क्या गधे की लीद डालोगे चिलम में।

सब लड़के एक साथ खिलखिलाकर हंस उठते है। मास्टर एक दो बार दहाड़कर उन्हें डराने की कोशिश करते हैं और फिर भुनभुनाते हुए बाहर चले जाते हैं।

बीरू उठकर असलम के पास जा बैठता है।

घर लौटते हुए बीरू के पांव जमीन पर नहीं पड़ते। सारा रास्ता हंसी मजाक में कट जाता है। उसके साथियों में से कोई भी उसके साथ छेड़छाड़ नहीं करता। असलम बहुत दूर तक उसके साथ आता है।

बीरू को एक नया दोस्त मिला गया है, एक हमदर्द, एक साथी। अब उसे स्कूल में किसी बात की चिंता नहीं रहेगी। लड़के उसे निक्चू कहकर नहीं बुलाएंगे। असलम अपनी छाती पर हाथ रखकर कहता है—अगर फिर कभी मास्टर ने तुम्हें पीटा तो मैं उन्हें मजा चखा दूंगा ! सारे शहर की दीवारों पर कोयले से उनका नाम लिख दूंगा। लिख दूंगा, मास्टर फकीर मुहम्मद उल्लू है, मास्टर फकीर मुहम्मद की चिलम में गधे की लीद ! स्कूल के गेट पर उसकी शक्ल बनाकर नीचे लिख दूंगा, गधों का बादशाह।

असलम से जुदा होते समय बीरू कहता है—एक दिन तुम्हारे घर आऊंगा।

असलम जोर से कहता है—जरूर !

देवी दरवाजा खोलती है। बीरू उसे एक ओर धकेलकर अंदर

दाखिल होते ही कहता है—रोटी दो, मां, भूख लगी है।

लेकिन मां मुंह फुलाए ड्योढ़ी के एक कोने में खड़ी है।

—तो बोलो, क्या जवाब दूं इस चिट्ठी का ?

बाबा की आवाज सुनकर भी बीरू सहमता नहीं। उछल-उछलकर उनके हाथों से चिट्ठी छीनने की कोशिश करने लगता है।

—बोलो, मुझे फिर काम पर भी जाना है।

—मैंने तो कह दिया, मुझे मंजूर नहीं।

—तो फिर क्या इरादा है तुम्हारा ? इसे सारी उमर घर बिठाए रखोगी ? आखिर तुम्हें कुछ मंजूर भी होता या नहीं ?

—और कुछ भी हो, इस मत्थासड़े रामलाल को तो मैं अपनी लड़की की हवा भी न लगने दूं, रिश्ता तो दूर की बात है !

—लेकिन उसमें दोष क्या है ? जरा अक्ल से काम लो, आसमान से कोई फरिश्ता तो ढूंढ़कर लाओगी नहीं तुम। दसवीं पास है। नौकर है। देखने सुनने में अच्छा है।

—खाक अच्छा है।

—तुम्हारे मुंह में तो बस हमेशा ख़ाक ही रहेगी !

—मैं उसकी ईची बीची जानती हूं !

बीरू रोटी भूलकर बड़े ध्यान से ये बातें सुन रहा है। आज बाबा इतने आराम से न जाने कैसे बोल रहे हैं। यह रामलाल कौन है ? चिट्ठी में जाने क्या लिखा हुआ है।

—अच्छा, तो फिर न कर दूं ?

—और नहीं तो क्या, उस घर में अपनी लड़की देने से तो अच्छा कि कुएं में धकेल दूं उसे !

—अच्छा, अब ज्यादा बकवास मत करो।

सब बरतन गंदे पड़े हैं। खाने के लिए कहीं कुछ नहीं। चूल्हे

से धुएं की दो तीन बारीक धारियां उठ-उठकर छत से चिपकती जाती हैं। बीरू दहलीज के पास पड़े एक खाली गिलास को ठोकर मारकर रसोई से बाहर निकल आता है।

—शाबाश, शाबाश ! कहीं पीछे न रह जाना अपने बाप से ! जैसा बाप, वैसा बेटा ! तोड़ दे, सारे बरतन तोड़ दे ! देखता क्या है ?

बीरू एक घृणा भरी दृष्टि मां की ओर फेंकता हुआ बाहर निकल जाता है।

रोटी नहीं तो न सही, आज वह मां की बड़बड़ नहीं सुनेगा !

9

गली में बच्चे नाच रहे हैं—

रब्बा रब्बा मींह वसा...
साहडी कोठी दाने पा...
टोडी बच्चा हाय-हाय...
इंकलाब जिंदाबाद...

कई दिनों से रोज बादल घिर-घिर आते हैं। लेकिन बारिश नहीं होती। गली की औरतें कहती हैं, परमात्मा हमसे रूठ गया है।

बच्चे मुंह ऊपर को उठाए बंदरों की भांति नाच रहे हैं।

बीरू दरवाजे के साथ लगा चुपचाप उनकी ओर देख रहा है।

कालियां इट्टा काले रोड...
मींह वसा दे जोरोजोर...
टोडी बच्चा हाय-हाय...

इंकलाब जिंदाबाद...

बच्चे पूरे जोर से एक एक शब्द को खींचकर बादलों को आवाजें दे रहे हैं।

बीच-बीच में बीरू ऊपर आकाश की ओर देख लेता है। बादलों का अथाह समुंदर ठाठें मार रहा है। कभी-कभी बिजली की एक कांपती हुई सी लकीर यूं खिंच जाती है, जैसे किसी ने चाकू की नोक से बादलों को फर्र से फाड़ दिया हो। और कभी- कभी वह लकीर यूं इधर उधर यहां वहां दौड़ती हुई नजर आती है, मानो आकाश में चमकते हुए मेंढ़क फुदक रहे हों। और कभी- कभी सारा आकाश एकदम शांत हो जाता है, मानों बादलों को अचानक नींद आ गई हो।

रब्बा रब्बा मींह वसा...

साहडी कोठी दाने पा...

टोडी बच्चा हाय-हाय...

इंकलाब जिंदाबाद...

बीरू दहलीज पर बैठ जाता है, घुटनों को अपनी बांहों की लपेट में लेकर ठोड़ी को उन पर टिकाकर, एक ठंडी सांस लेता है।

कालियां इट्टा काले रोड...

मींह बसा दे जोरोजोर...

टोडी बच्चा हाय हाय...

इंकलाब जिंदाबाद...

अगर मेंह बरस भी पड़े तो भला इन सालों को क्या मिल जाएगा ? मेंह तो तब बरसना चाहिए जब चूल्हे में आग हो। मेंह भी बरसे और खाने को भी कुछ न मिले, उससे तो कड़कती धूप अच्छी। मेंह में भूख बहुत लगती है।

रब्बा रब्बा मींह वसा,

साहडी कोठी दाने पा...

टोडी बच्चा हाय-हाय...

इंकलाब जिंदाबाद

इन सालों की कोठी में तो पहले ही बहुत दाने होंगे !

बादल दहाड़ते हैं। लड़के चिल्लाने लगते हैं—कन मन, कन मन...

नन्हीं-नन्हीं बूंदें बीरू की गर्दन पर पड़ती हैं, मानो बादल उससे छेड़खानी कर रहे हों, उसे गुदगुदी लगा रहे हों।

दरवाजा खुलता है। बीरू हड़बड़ाकर उठ बैठता है। पीछे मां खड़ी है। कुछ ऐसे रंग में कि आदमी देखकर डर जाए।

—जा, जाके उन्हें बाजार से बुला ला।

बीरू आकाश की ओर देखता है।

—कुछ नहीं होता, कुछ नहीं होता। अगर दो छीटें पड़ भी गए तो आफत नहीं आ जाएगी। नमक का तो नहीं बना तू कि गल जाएगा।

—अब क्या पता, इस वक्त वे कहां होंगे !

—जहां भी हों, ढूंढ़ के बुला ला। यहीं कहीं टक्करें मार रहे होंगे, विलायत तो चले नहीं गए ?

बीरू भागता हुआ गली से निकलकर बाजार में दाखिल हो जाता है। बाजार में घुसते ही कपड़े की एक दुकान पड़ती है। उसमें कपड़े कम और तमाशबीन ज्यादा होते हैं। बाबा वहां बैठकर ताश खेला करते हैं। दुकानदार का नाम सरदारी है। लोग उसे दारी बजाज कहकर बुलाते हैं।

—आओ नंद के लाल !...आओ मदनगोपाल ! कहो, क्या बात है ? मां ने भेजा है। तुम्हारी मां से तो परमात्मा दुश्मन को भी बचाए !

दुकान में बैठे सभी लोग हंसने लगते हैं।

बीरू शर्म के मारे पसीना पसीना हो जाता है।

सरदारी की दुकान से आगे कुछ दुकानें छोड़कर एक घड़ीसाज की दुकान है। उसकी दोनों टांगें गायब हैं।

बीरू घड़ीसाज की दुकान के सामने खड़ा-खड़ा भूल जाता है कि वह बाजार किस काम के लिए आया था। यह टुण्डा लाट—कोई उसे उसके सही नाम से नहीं पुकारता—बरसों से चला आता है और बरसों चलता चला जाएगा। लोग कहते हैं कि वह बरसों से एक ही घड़ी को बना बिगाड़ रहा है। वह चारों तरफ से सब्जी के टोकरों से घिरा रहता है। सब्जी के ग्राहक नहीं आते तो शायद वक्त काटने के लिए उसी एक घड़ी को ठीक करने में डूब जाता है। और जब

सब्जी के ग्राहक होते हैं तो उनसे लड़ने झगड़ने में।

आखिर बीरू टुण्डे की दुकान के सामने खड़ा खड़ा ऊब जाता है। वह कुछ देर के लिए भूल जाता है कि बाबा को ढूंढ़ने के लिए घर से चला था। उस दुकान से आगे निकलते ही बीरू का ध्यान फिर ऊपर उमड़ घुमड़ रहे बादलों की ओर चला जाता है। बादल गड़गड़ा रहे हैं, मानो किसी पर मुसीबतों के पहाड़ तोड़ रहे हों। बच्चे अब भी गली में नाच रहे होंगे।

सामने से बाबा और शामसिंह को आते देखकर बीरू रुक जाता है। शामसिंह की मुस्कराहट उसकी घनी मूंछों के पीछे से यूं झांक रही है जैसे चुहिया अपने बिल में से। और बाबा के माथे पर एक बड़ा सा त्रिशूल तना हुआ है।

—यहां कैसे घूम रहे हो ?

बीरू बाबा की अंगुली पकड़कर उन्हें घर की ओर खींचता है, जैसे अक्लमंद को इशारा दे रहा हो। बाबा इशारा समझ जाते हैं और वही इशारा शामसिंह को दे देते हैं।

बाबा ड्योढ़ी में खड़े हैं। उनकी नजरें एक चिट्ठी पर जमी हुई है और हाथ कांप रहे हैं। मां चुपचाप एक ओर खड़ी है। उसके बाल उलझे हुए हैं, जैसे अभी अभी किसी से कुश्ती करके हटी हो। देवी काके को गोद में लिए एक कोने में बैठी है।

बाबा चिट्ठी को मरोड़कर, उसकी एक गोली सी बनाकर नाली में फेंक देते हैं। फिर मां की ओर एक जहरीली दृष्टि डालकर रोने लगते हैं।

बीरू समझ जाता है कि चिट्ठी में क्या लिखा है। कुछ दिन पहले एक चिट्ठी आई थी, जिसमें दादी की बीमारी की खबर थी। दादी

मर गई होगी।

—कब पूरी हुई ?

—पिछले सोमवार को।

—चिट्ठी बहुत देर से मिली।

बाबा मां की इस बात का कोई जवाब नहीं देते। उन्होंने अपने चेहरे को अपने हाथों से ढांप लिया है।

कुछ देर बाद वे मां से पूछते हैं—तुम्हारे पास कुछ पैसे हैं ?

मां 'न' में सिर हिला देती है।

—देवी, तुम्हारे पास ?

—नहीं।

बाबा बीरू की ओर देखते हैं, जैसे उससे भी वही सवाल कर रहे हों।

10

बाबा, मां और काका गांव गए हुए हैं, जहां दादी मरी है। उन्हें गए तीन-चार दिन हो गए हैं। इस बीच बीरू और देवी दादी के मरने के सदमे को करीब-करीब भूल गए हैं।

घर की फिजा में ऐसा हल्कापन आ गया है मानो हर ओर से ठंडी-ठंडी हवा चल रही हो, ड्योढ़ी के काले कोनों में फूल खिल उठे हों।

देवी ने मां के चले जाने के बाद सारे घर को कुछ इस सलीके से झाड़ा बुहारा है कि बीरू को अपने घर और देवी की सहेली पारो के घर में बहुत कम अंतर नजर आने लगा है।

आग जलती है, लेकिन धुआं नहीं उठता, जैसे मां उसे भी अपने संग ले गई हो।

गली के सब बच्चों से बीरू की गाढ़ी छनने लगी है। वे उसके घर बेधड़क आते हैं। कहते हैं, अब क्या है, अब तो बीरू की मां यहां नहीं है। अब किसका डर है ? वह उनके घर जाता है। लड़के कहते हैं, जब से बीरू की मां गई है बीरू को तो पर लग गए हैं। और जब कभी उसके किसी दोस्त की मां उससे पूछती है, बीरू तेरी मां तो अब आने ही वाली होगी तो बीरू को ऐसा अनुभव होता है जैसे किसी ने उसके पर काट लेने की कोशिश की हो।

जाने से पहले मां ने उसे बहुत हिदायतें दी थीं। कहा था, देवी का ख्याल रखना। जहां-जहां जाए, उसके पीछे-पीछे जाना। जिस जिससे मिले, मुझे बताना। घर बैठना। सूरज डूबने से पहले हमेशा घर लौट आना। दरवाजा अंदर से बंद रखना। धूप में मत घूमना। बारिश में मत नहाना। देवी का पीछा तो कभी भी न छोड़ना...

बीरू इन सब पाबंदियों को तोड़ फोड़ रहा है।

आज उनका खाना पारो के घर है। देवी और पारो रसोई में बैठी बातें कर रही हैं।

उसी समय एक औरत और एक नौजवान अंदर आते हैं। देवी और पारो उठकर उन्हें नमस्ते करती हैं। बीरू कुछ देर के लिए कटकर एक तरफ हो जाता है। वे लोग बैठ जाते हैं और देवी और पारो हंसती हुई, एक दूसरे के पीछे भागती हुई दूसरे कमरे में चली जाती हैं। बीरू अकेला रह जाता है।

—तुम किस क्लास में पढ़ते हो ?

—चौथी में।

—कौन सी किताब पढ़ते हो ?

बीरू से कोई जवाब नहीं बन पाता।

—तुम्हारे मास्टर का नाम क्या है ?

—मास्टर फकीर मुहम्मद।

—ओह !

उस औरत के साथ जो आदमी है, वह इतना बड़ा भी नहीं है कि वह उसका पति हो और इतना छोटा भी नहीं कि उसका लड़का हो। और, न जाने क्यों, बीरू के दिमाग में इन दो रिश्तों के सिवाय और कोई तीसरा रिश्ता इस समय बिल्कुल आ ही नहीं रहा। उसका रंग गोरा है और बाल घुंघराले। जिस तरह वह उस औरत से सटकर बैठा है, बीरू को अच्छा नहीं लगता। बिलकुल उसके पेट के साथ उसकी पीठ लगी है। चारपाई दोनों के बोझ से काफी नीचे को धंस गई है।

वह औरत अब उस आदमी की पीठ पर हाथ फेर रही है और वह आदमी उस औरत की पीठ पर। बीरू को अच्छा नहीं लगता, लेकिन उसकी नजरें उन दोनों पर ऐसे गड़ सी जाती हैं कि शक हो कि उसे अच्छा ही लग रहा है।

बीरू खंखारता है, जैसे इस तरह दोनों के बीच एक पर्दा गिरा देना चाहता हो।

देवी और पारो रसोई में हैं। लेकिन पहले की तरह चहचहा या गुनगुना नहीं रहीं।

रसोई में बिल्ली घूम रही है। बीरू पांव पटककर शी करता है ! और देवी कहती है—अरे, तू यहां खड़ा है ? जा, जाके उन लोगों के पास बैठ न !

—वे लोग हैं कौन ?

—अरे बहनजी को नहीं जानता ? कई बार हमारे घर आई हैं।

अरे, वही, जो लाहौर में रहती हैं।...अरे बाबा, वही जिन्हें मां पूतना दाई कहती है !

बीरू को उस स्त्री के सभी नाम एक साथ याद आ जाते हैं। उसका अपना असली नाम भी और वे भी जो मां ने यदा कदा दिए हैं। मां उसे पूतना के अलावा काली कलूटी, बगुला भगत, मोटी मटक, मीठी छुरी और फफेकुट्टन भी कहती है।

—और उसके साथ कौन है ?

—एक आदमी। पारो जवाब देती है।

—उसका क्या लगता है ?

—उसका तो जो लगता है सो वह ही जाने। तुम अब यह पूछो कि तुम्हारी बहन का क्या लगता है।

देवी शरमा जाती है। पारो हंसने लगती है। और बीरू को कुछ समझ में नहीं आता कि आखिर बात क्या है !

—बताओ न, वह कौन है ? नहीं तो मां के आने पर सब कह दूंगा !

—क्या कह दोगे ?

—सब कुछ।

—कह देना। तब तक यह यहां रही तो ना ! यह तो बस अब उड़ी कि तब उड़ी।

—कहां ?

—इस आदमी के साथ।

देवी, आदमी के साथ !

बीरू पांव पटक कर बाहर चला जाता है। कुछ देर गली में खड़े रहने के बाद वह असलम के घर चला जाता है। असलम के घर में उसे अब बहुत मजा आता है। असलम की बहन हफ़ीज़ा लाहौर

से आई हुई है। वह उसे बहुत अच्छी लगती है। असलम की मां भी।

11

एक रात देवी और बीरू पारो के घर सोते हैं। वह पारो के साथ सोता है। देर तक उसे ठीक तरह से नींद नहीं आती। नींद पारो और देवी को भी नहीं आती। वे दोनों न जाने रात भर क्या क्या किस्से एक दूसरे को सुनाती रहती हैं। वह आंखें बंद किए पारो के साथ सटा पड़ा रहता है। कभी कभी पारो उसे अपनी छाती से भींचकर चूम लेती है और उसकी आंखें बोझिल हो जाती हैं। लेकिन फिर उसका ध्यान उन दोनों की बातों की ओर लग जाता है।

पारो, मां को कौन बताएगा ?

—तुम्हें ही बताना पड़ेगा।

—मेरी तो वह जान ले लेगी।

—तो फिर बहनजी से कह।

—बहनजी तो मां को एक आंख नहीं भाती।

—लेकिन वो तेरे बाबा से तो बात कर सकती है।

—उनसे तो तुम भी कह सकती हो।

—तो फिर क्या है !

—असली डर तो मां का है। सुनेगी तो बस पागल हो जाएगी। पारो, मेरा तो दिल बैठ जाता है यह सब सोचकर।

—अगर इतना ही कमजोर दिल था, तो पहले ही खयाल रखती।

—उस दिन पता नहीं, क्या हो गया था मुझे। लेकिन अब वैसा जोश मुझमें नहीं रहा। सच्ची बात है।

ये दोनों उसी आदमी के बारे में बात कर रही हैं।

—बाल देखे, कितने खूबसूरत हैं।

—और आंखें !

—और नाक !

—और रंग कितना गोरा है !

—मैं तो बस आवाज पे मर गई ! गाता कितना अच्छा है !

—अरी, उस आवाज पर कौन नहीं मरेगा ? अगर तूने पहल न कर ली होती तो मैं खुद मर गई होती ! सच कहती हूं, अगर ऐसे आदमी के लिए मां बाप को छोड़ना पड़े तो छोड़ देना चाहिए।

—तू अभी सोया नहीं, बीरू ?

—नहीं।

—बदमाश कहीं का ! हमारी बातें तो नहीं सुन रहा ?

—सुन रहा हूं।

—सुनता रहे, यह क्या समझेगा !

—मैं सब समझ रहा हूं। बताऊं ?

—नहीं, बाबा ! तू मेहरबानी करके सो जा।...अच्छा, देवी, अब तू भी चुप करके सो जा। मीठे-मीठे सपने आएंगे।

—तेरा सिर आएगा !

दोनों हंसती हैं। पारो बीरू को अपनी बांहों में लेकर खूब जोर से प्यार करती है। बीरू की आंखों में खुमारी आ जाती है। उसे लगता है जैसे उसकी मां ने पहली बार उसे प्यार किया हो।

—सुन, पारो, एक बात मेरे दिल में बहुत खटक रही है।

—फिर ले बैठी ना इसी किस्से को ! अरे बाबा, हुआ ना ! अब कोई और बात भी तो कर !

—सुन तो। तूने देखा नहीं कि बहनजी उससे किस तरह लिपटी

रहती हैं !

—तो क्या हुआ ? आखिर उसका बेटा है।

—लेकिन ऐसे तो मां अपने सगे बेटे से भी नहीं लिपटती और खास कर जब बेटा इतना बड़ा हो जाए।—और वह तो आखिर उनका असली बेटा भी नहीं।

—यह तू एक और ही चिंता ले बैठी। अरे बाबा, शादी के बाद तो तू ही लिपटेगी उसके साथ। तब तक लिपट लेने दो बेचारी बुढ़िया को उसके साथ।

—लेकिन, पारो, बहनजी को बुढ़िया कौन कहेगा !

देवी उठकर पारो के पास आ लेटती है। बीरू उन दोनों के बीच कुछ पिसने सा लगता है। लेकिन उसे नींद आ रही है।

दूसरे दिन जब नहा धो कर देवी और बीरू अपने घर जाते हैं तो दूर से ही घर का दरवाजा खुला देखकर वे ठिठककर रह जाते हैं। मां आ गई दिखाई देती है। ताला टूटा हुआ कुंडी से लटक रहा है।

बीरू देवी की ओर देखता है। उससे पूछना चाहता है कि अब क्या होगा ? देवी सुन्न खड़ी है, जैसे उसे काठ मार गया हो।

अंदर से कोई आवाज नहीं आ रही।

आखिर दोनों धीरे-धीरे दरवाजे की ओर बढ़ते हैं। मां को सामने दहलीज में खड़ा देखकर उसका खून खुश्क हो जाता है।

मां पांव से नंगी, सिर से नंगी, सांस फुलाए, आंखों से आग बरसाती हुई उन दोनों की ओर देख रही है। उसका चेहरा पीला पड़ गया है। उसे देखते ही बीरू को ख्याल आता है कि मां को पेट भर रोटी गांव में भी नहीं मिली होगी।

अचानक बीरू को लगता है कि जैसे उसके सामने मां नहीं, मां का भूत खड़ा हो, लंबे-लंबे दांतों वाला, माथे पर दो सींगों वाला,

उल्टे पांवों वाला...

वह चीख मारकर मां की टांगों से लिपट जाता है।

कुछ देर बाद जब उसके सिर में आ रहे चक्कर कुछ थमते हैं तो उसके कानों में मां और देवी के एक साथ रोने की आवाज आती है। मां कह रही है—हाय, मैं वहां क्यों गई ? हाय, मैं क्यों और किसलिए गई ? हाय, मेरा सोने जैसा काका वहीं रह गया—

बीरू को यह समझने में कुछ देर लगती है कि काका वहां क्यों रह गया है। और जब बात उसकी समझ में आती है तो सबसे पहले उसका ध्यान बाबा की ओर जाता है। बाबा कहां हैं? वे भी कहीं काके की तरह वहां तो नहीं रह गए !

12

बीरू को मानो किसी ने आग में डाल दिया हो। उसका बुखार बहुत तेज हो गया है। मां बार-बार उसके माथे को हाथ लगाती है। फिर आंखे बंद करके हाथ जोड़कर कभी ऊंची और कभी धीमी आवाज में भगवान से बातें करने लगती है। बीरू टुकुर- टुकुर मां को देख रहा है। मां की आवाज उसके कानों में बुखार की तपिश से छन-छनकर पड़ती है—हाय, मुझ पापिन को उस वक्त क्या हो गया था ! हाय, मेरे हाथ क्यों न टूट गए। मैंने क्यों पीटा अपने लाल को ! मैंने इस जुबान से अपने लाल को क्या-क्या गालियां नहीं दीं।

बीरू का खून गुस्से और प्यार से खौल रहा है। मां का प्यार भी सौदाइयों का सा और गुस्सा भी।

देवी मां की आंख बचाकर कई बार बीरू के गालों को हाथ

लगा चुकी है। बीरू आंखें बंद कर लेता है तो मां देवी से झगड़ना शुरू कर देती है।

मां के आते ही पुराने दुखड़े फिर से शुरू हो गए हैं। पैसा नहीं, आटा नहीं, कुछ भी नहीं। जब तक मां नहीं थी, सब कुछ था। पता नहीं, देवी कैसे सब इंतजाम किया करती थी। बाबा ठीक कहते हैं, मां की हाय-हाय से ही घर में कुछ नहीं रहता। दादी कहा करती थी, तेरी मां कुलच्छमी का अवतार है। जब वह बहुत छोटा था तो मां उसे एक कहानी सुनाया करती थी, लच्छमी और कुलच्छमी दो बहनें थीं...इसके आगे पता नहीं कहानी कैसे चलती थी। आखिर में मां दो तीन बार कहा करती थी—लच्छमी आवे, कुलच्छमी जावे, लच्छमी आवे, कुलच्छमी जावे...हमारे घर में तो कुलच्छमी ऐसी आई है कि जाने का नाम ही नहा लेती।

बाबा किसी और ही मिट्टी के बने हुए हैं। गुस्सा उनका भी बहुत तेज है, ऐसा तेज है कि बस यूं लगता है कि भूचाल आ रहा है। लेकिन न जाने कैसे बीरू के दिल में यह खयाल बैठ गया है कि बाबा फिर भी अच्छे हैं, समझदार हैं, उनके गुस्से की वजह मां है। जब बाबा मां को पीटते हैं तो वे बीरू को बहुत बुरे लगते हैं। बीरू का जी चाहता है कि वह उठकर उन्हें पीटने लगे। एक दो बार मां ने उसे ऐसा करने के लिए उकसाया भी था। मां ने कहा था, अब तू जवान हो रहा है, बेटा, अब तो तुझे मेरी तरफदारी करनी चाहिए।

बाबा को माथा पीटते देखकर बीरू को फौरन उन पर रहम सा आने लगता है। शायद अब वह यह समझ सकता है कि बाबा हमेशा मां को पीट चुकने के बाद खुद अपने आपको भी करीब करीब उतना ही पीट लेते हैं। मां पर उसे रहम तभी आता है जब वह पिट रही हो। उस समय भी अगर वह साथ-साथ बोलती जाए तो बीरू

को रहम और प्यार के साथ गुस्सा भी आता है।

बीरू आंखें खोलता है। उसे लगता है, जैसे नींद का बहाना करते करते वह सचमुच थोड़ी देर के लिए सो गया था। अब वह घर में अकेला है। मां शायद गली में किसी से मिलने चली गई है। देवी भी मौका देखकर निकल गई है।

बाबा मां के साथ वापस क्यों नहीं आए ? अगर वे होते तो मां उसे इतना नहीं पीटती। उसे बुखार भी नहीं चढ़ता। लेकिन बुखार तो धूप लग जाने से हो गया होगा। कल से पारो उनके घर नहीं आई। पारो बहुत चालाक है। जानती है कि मां का पारा चढ़ा हुआ होगा। देवी शायद उसी के घर गई होगी। देवी वहीं बैठी रहे और मां किसी दूसरे के घर। बाबा जहां हैं वहीं पड़े रहें, दादी और काका तो मर ही गए हैं और पीछे से चुपके से मैं भी मर जाऊं...

उसकी आंखें फिर खुल जाती हैं। अपनी मौत की कल्पना से न उसे डर लगता है, न ही खुशी होती है।

कुछ देर बाद मां फिर उसके पास आ बैठती है।

—मां, बाबा कहां है ?

—जाने मेरी जूती !

—तुम्हारे साथ वापस नहीं आए ?

—नहीं।

—तो फिर कहां रह गए ?

—जाने मेरी बला !

—कब आएंगे ?

—क्या पता ! देवी कहां मर खप गई ?

वह चुप रहता है।

—मैं सब सुन चुकी हूं कि पीछे से उसने क्या शगूफा खिलाया

है। बीरू का दिल धक से रह जाता है।

—आज वह घर आए तो सही !

बीरू को मां का ध्यान बदलने की कोई तरकीब नहीं सूझती। वह आंखें बंद कर लेता है, मानो डर के मारे ही उसे नींद आ गई हो।

कुछ देर बाद जब उसकी आंख खुलती है तो वह देखता है पारो मां के पास खड़ी है और देवी की आंखों से आंसू बह रहे हैं।

—काके को हुआ क्या था ? पारो पूछती है।

शायद मां को काके की बीमारी और मौत के बारे में खुलकर बात करने का अवसर अभी तक नहीं मिला। बीरू के कान खड़े हो जाते हैं। वह भी सुनना चाहता है कि काका आखिर मरा तो किस तरह। उसे दरअसल अभी तक पूरा यकीन नहीं आया है कि काका वाकई मर गया है। वह समझता है कि शायद मां यूं ही गुस्से मे उसे कहीं फेंक आई है।

मां आंखें पोंछ रही है। मां का गुस्सा पिघलता देख देवी भी चुपके से मां और पारो के पास आ खड़ी होती है। अगर मां ने अब उसे कुछ नहीं कहा तो समझो कि कम से कम इस वक्त तो देवी के सिर से बला टल ही गई।

अब बाबा न आएं। नहीं तो बनी बनाई बात फिर बिगड़ जाएगी। बीरू उठकर बैठ जाता है।

—लेट जा न ! कहीं बुखार में हवा लग गई तो क्या करूंगी !

मां को गर्मियों में भी हवा का खतरा लगा रहता है, जैसे सभी बीमारियों की वजह सिर्फ हवा हो।

—उसे क्या हुआ था, मासीजी ? कितने दिन बीमार रहा ? किसी वैद्य हकीम को तो दिखाया ही होगा। वहां गांव में कोई डाक्टर तो

होगा नहीं !

मां रसोई की दहलीज पर बैठ जाती है। पारो और देवी भी वहीं बैठ जाती है।

—हाय, उसे तो किसी की नजर खा गई। और उसे कुछ भी नहीं हुआ था। जैसे ही हम वहां पहुंचे, सब कहने लगे, जानकी, तेरा बेटा कितना मोटा है ! कितने साल का है ? मैंने कहा, बस अभी तो एक ही साल का हुआ है। सब आंखें फाड़ के उस बेचारे की तरफ देखने लगे। कहने लगे—हाय, देखने में तो दो तीन साल का लगता है ! बस, उसी दिन बेचारे को ऐसा बुखार चढ़ा कि अभागे ने फिर आंखें नहीं खोली।

—कोई दवाई तो...

—दवाई क्या करती ! इन्हें तो वहां भी मिल गई बुरी संगत। गए थे मां की गमी में और पीने लगे शराब। दवाई कौन करवाता ?

मां ठोड़ी को घुटनों पर टिकाकर हौले-हौले झूलने लगती है। बीरू सोचता है, इस तरह चुपचाप रोती हुई मां ज्यादा बुरी दिखाई नहीं देती।

मां कह रही है—हाय, एक दुख हो तो किसी को बताऊं। मेरा तो नसीब ही फूट गया है।

पारो पूछती है—लेकिन, मासीजी, आपने मासड़जी को ट्रंक की चाबी दी ही क्यों ?

—हाय, न देती तो गाड़ी में ही वे मुझे पीटने लगते। मुझे क्या पता था। कहने लगे, गहने हैं, तेरे से कहीं गुम हो जाएंगे, मैं अपने पास रखूंगा। मैंने टालने की बहुत कोशिश की, लेकिन उन्होंने कब मेरी सुनी है !

—लेकिन फिर वे गए कहां ? आ तो उसी गाड़ी से रहे थे।

—मैं क्या जानूं ! मैं जब यहां स्टेशन पर उतरी, तो वे कहीं दिखाई नहीं दिए। हाय, अब मैं क्या करूं, किससे कहूं ? न जाने कहां टक्करें मार रहे होंगे। जरूर वहीं रह गए होंगे जेहलम के स्टेशन पर। हाय, मेरे सोने के कड़े पूरे पांच तोले के थे !

बीरू हैरान है कि बाबा की बात करते-करते मां कड़ों का वजन क्यों बताने लगी ?

—लेकिन, मासीजी, वे गहनों का करेंगे क्या ?

—करेंगे क्या ? कहीं बेचकर खा-उड़ाकर खाली हाथ लौटेंगे। और क्या करेंगे ? पारो, तू नहीं जानती उनकी आदतें। कोई बैठकर सुने तो मेरे दुखड़े !

और मां अपने दुखड़े सुनाने बैठ जाती है। बीरू यह सब कहानियां कई बार सुन चुका है।

जब तक मां बोलती रहती है, बीरू मुंह और सिर लपेटे बिस्तर में पड़ा करवटें बदलता और झल्लाता रहता है।

एकाएक मां बोलना बंद कर देती है। बीरू समझता है, शायद बाबा आ गए। वह मुंह से चादर हटाता है। सामने बहनजी खड़ी है।

बहनजी धीरे-धीरे मां की ओर बढ़ती है। मां के होंठ फड़फड़ा रहे हैं। मां के होंठ या तो उस समय फड़फड़ाते हैं जब वह बहुत गुस्से में हो या उस समय जब उसे रोना आ रहा हो। इस समय ऐसा लगता है कि मां को गुस्सा और रोना एक साथ आ रहा है।

—भाभी, काके की खबर सुनकर बहुत दुख हुआ।

बहनजी मां को भाभी और बाबा को भ्राताजी कहती है। बीरू सोचता है, मां जवाब देगी, पूतना दाई ! तू मेरे घर से निकल जा ! लेकिन मां चुप रहती है। उसकी आंखें भीगने लगती हैं। बहनजी मां के पास जा बैठती है। बीरू उठकर बैठ जाता है।

—भ्राताजी कहां हैं ?

—वे अभी नहीं आए। पारो कहती है।

—भ्राताजी से जो कहना है, मुझी से कह दो न। तुम समझती हो कि जिस तरह तुमने लड़की को फुसला लिया है, उसी तरह मीठी मीठी बातें करके तुम उन्हें उल्लू बना लोगी ? लेकिन कान खोलकर सुन लो, जब तक मेरे दम में दम है, यह शादी नहीं होगी, नहीं होगी, नहीं होगी !

—पहले आप अपना गुस्सा निकाल लें, फिर...

—मुझे यह लल्लो पत्तो अच्छा नहीं लगता ! मैं तुम्हारी चिकनी चुपड़ी नहीं सुनूंगी ! मैं सब सुन चुकी हूं।

क्या सुन चुकी हैं ?

—बस-बस, मेरे साथ ज्यादा बातें करने की जरूरत नहीं। तुम अपने आपको बहुत चालाक समझती हो। चालाक तो तुम हो ही। चालाक न होती तो...खैर, जो तुमने किया है, उसका बदला तुमसे परमात्मा लेगा ! तुमने यही सोचा न कि बात एक बार सारे शहर में फैल गई तो हम 'न' नहीं कर सकेंगे ? तुम्हारे उस आवारा छोकरे से शादी करने के बजाय हम अपनी लड़की को जहर दे देंगे ! न जात, न बिरादरी, न घर, न घाट। मैं पूछती हूं, वह मुस्टंडा तुम्हारा लगता क्या है ?

—वह मेरा वही लगता है, जो बीरू आपका ! वह मेरा बेटा है।

—अरी, जा ! किसे चराती है ! मैं सब जानती हूं ! जरा जाकर लोगों की बातें तो सुन ! कुछ शर्म हो तो...कौन मानेगा कि वह तुम्हारा बेटा है ? हमारी लड़की का बेड़ा गर्क क्यों करती हो ? खुद ही कर लो न उससे शादी !

बहनजी यह सुनते ही उठ खड़ी होती है और बगैर कुछ कहे

सुने तेज-तेज बाहर चली जाती है।

बीरू मां की बात पूरी तरह समझ नहीं पाता, इसलिए हैरान है कि बहस इतनी जल्दी कैसे खत्म हो गई।

देवी रोती हुई कमरे से बाहर आती है और चीखकर मां से कहती है—मां, तू मेरी मां नहीं, दुश्मन है !

मां देवी की चीख का जवाब चीख से देती है—तू मेरी लड़की नहीं, सौत है, सौत !

देवी रोती हुई कोठरी में चली जाती है और दरवाजा अंदर से बंद कर लेती है। पारो कानों को हाथ लगाती हुई ड्योढ़ी से बाहर चली जाती है।

13

बीरू बिस्तर में लेटा चुपचाप अपने हाथों की ओर देख रहा है, जैसे गहरी लगन से कोई किताब पढ़ रहा हो। मां बार-बार उसे ऐसा करने से मना कर चुकी है। सौ बार कहा है, हाथों की तरफ आंखें फाड़ फाड़कर न देखा कर, इससे दुख बढ़ता है। बीरू धीरे से मुस्करा देता है। मुस्कराने से उसके पपड़ी जमें होंठों में दर्द की एक चिनगारी चमक जाती है। और वह उन पर अपनी जीभ फेरकर दांतों से निचले होंठ को काटने लगता है। मां ने उसे होंठ काटने से भी कई बार रोका है। होंठ काटना बुरा होता है, बेटा, ऐसा करने से दुख बढ़ता है।

मां शायद मंदिर गई हुई है। देवी भी घर में नहीं है। जब मां घर में होती है तो उसके पास औरतों की भीड़ सी लगी रहती है। सबकी सब एक साथ बोलती हैं। पहले कभी उसके घर औरतों की

इतनी भीड़ जमा नहीं हुई थी। देवी कहती है, सब मां को बहकाने फुसलाने के लिए आती हैं। मां कहती है, किसी को हमदर्दी होती है, तभी तो कोई आता है, नहीं तो किसी को क्या पड़ी है कि सब काम काज छोड़कर आए।

बीरू शीशा उठाकर उसमें अपना चेहरा देखता है। बुखार के कारण उसके गालों में गड्ढे पड़ गए हैं और उसकी आंखें उबली सी दिखाई देती हैं। उसके बाल बहुत उलझे हुए हैं और उसका रंग बहुत पीला पड़ गया है। शीशा देखते देखते बीरू का सिर चकराने लगता है और वह शीशे को अपनी छाती पर रखकर लेट जाता है

और आंखें बंद कर लेता है। लेटे लेटे बीरू की आंखें कमजोरी के कारण भारी हो जाती हैं। वह करवट बदलता है। शीशा खिसककर नीचे गिर जाता है और उसके तीन टुकड़े हो जाते हैं। टुकड़े तो पहले ही तीन थे, लेकिन अब वे फ्रेम से अलग हो गए हैं। वह टुकड़ों को उठाकर उन्हें फ्रेम में लगाने की कोशिश करने लगता है। थोड़ी देर बाद उसकी कमर दुखने लगती है और उसकी आंखों के सामने काले काले धब्बे फैलने लगते हैं। और फिर एकदम न जाने क्या होता है कि वह उन टुकड़ों को जोर से सामने फेंक देता है। टुकड़े दीवार से टकराकर बिखर जाते हैं।

—बीरू, यह क्या हो रहा है तुझे ?

देवी की आवाज सुनकर वह चौंक पड़ता है।

—मैं तेरे लिए दूध गरम करके लाई थी। अब अगर इसमें शीशे का कोई टुकड़ा पड़ गया हो तो ? तुझे हो क्या गया है, बैठे बैठे पागल क्यों हो जाता है ?

बीरू कोई जवाब नहीं देता।

—मैं दूध नहीं पीऊंगा।

—अरे बाबा, अभी छानकर ले आती हूं। पी ले !

—नहीं, मुझे भूख नहीं।

—सुबह का भूखा पड़ा है और भूख नहीं ! मैं तो खास तेरे लिए पारो से मांगकर लाई हूं।

—नहीं, नहीं, नहीं !

—नहीं तो न सही ! देवी फिर बाहर चली जाती है।

अगर देवी की शादी नरेश से हो जाती तो वह भी उसके साथ लाहौर चला जाता। लेकिन अब देवी की शादी और किसी से भी हो, नरेश से नहीं होगी। मां ने साफ कह दिया है, मर जाऊंगी, लेकिन

तेरी शादी उस लफंगे से नहीं होने दूंगी। देवी ने भी कह दिया है, सारी उमर कुंआरी बैठी रहूंगी, लेकिन शादी किसी दूसरे से नहीं करूंगी।

अगर इसी वक्त बाबा आ जाएं तो मजा आ जाए। मैं उनसे कड़ों की सारी बात पूछ लूं, उन्हें नरेश वाली बात बता दूं, उनकी गोद में बैठकर...बाबा का ख्याल आते ही उसका गला भारी होने लगता है और वह सोच में डूब जाता है।

ड्योढ़ी का दरवाजा खुलता है। बीरू एक झटके से उठकर बैठ जाता है। दरवाजा बंद हो जाता है। बीरू चारपाई से नीचे उतर आता है। सामने बाबा खड़े हैं। वही ढीली ढाली पगड़ी, वही बढ़ी-बढ़ी दाढ़ी, वही मैले-मैले कपड़े, फटे हुए जूते, झुका सा सिर, सुर्ख आंखें जो हमेशा जमीन पर गड़ी रहती हैं। बीरू दौड़कर उनकी टांगों से लिपट जाता है। बाबा उसकी पीठ पर हाथ फेरते हैं। बीरू उनकी ओर देखता है। उनकी आंखों में आंसू हैं। बीरू की निगाह एक प्रश्न बनकर उन तक पहुंचती है। बाबा आंख चुरा जाते हैं। बीरू उन्हें चारपाई की ओर ले जाता है। उसके होंठ कांप रहे हैं। बाबा उसे छाती से लगा लेते हैं। बीरू को बहुत आराम मिलता है और उसकी आंखों पर मस्ती सी छाने लगती है।

—यह शीशा कैसे टूटा ?

—मैंने तोड़ दिया।

बाबा कुछ नहीं कहते। बीरू सोचता है, अभी पूछेंगे कि मां कहां है। लेकिन बाबा मां या देवी के बारे में कुछ नहीं पूछते। बीरू टकटकी लगाए उनकी ओर देख रहा है। बाबा उसकी आंख से आंख नहीं मिला पाते, जैसे उन्हें शर्म आ रही हो। बीरू पूछना चाहता है कि वे इतने दिन कहां रहे। वह पूछना चाहता है कि मां के कड़ों का क्या हुआ, वह पूछना चाहता है कि रामलाल कौन है, वह उन्हें जेहलम के स्टेशन

पर कैसे मिल गया, कड़े लेकर वे दोनों कहां गए ? वह पूछना चाहता है कि वे उसके लिए क्या लाए हैं, उनका सामान कहां है...

लेकिन कुछ पूछने या बताने के बजाय वह आधा उनकी गोद में, आधा बिस्तर पर पड़ा चुपचाप उनकी ओर देखकर खुश हो रहा है, जैसे उनसे कह रहा हो, घबराओ नहीं, मैं आपसे कुछ भी नहीं पूछूंगा।

—तेरी मां ने आकर शोर तो बहुत मचाया होगा ?

बीरू हां में सिर हिला देता है।

—कड़ों की बात की होगी ?

बीरू फिर हां में सिर हिला देता है।

—क्या कहती थी ?

बीरू क्या बताए, वह सोच ही रहा होता है कि बाबा पूछते हैं—दफ्तर से तो कोई आदमी नहीं आया था।

—आया था।

—क्या कहता था ?

—एक कागज दे गया था।

—कहा है ?

कागज की बात सुनते ही बाबा का रंग पीला पड़ जाता है और वह उसे गोद से झटककर खड़े हो जाते हैं।

—कहां है ? बताओ !

—मां ने कहीं रखा है।

—वह कहां है ?

—मंदिर गई हुई है

—देवी कहां है ?

—पारो के घर।

—कागज में क्या लिखा था, कुछ पता है ?

—नहीं।

—कब आया था ?

—कल।

—कौन देने आया था ?

—चपरासी।

—उसने कुछ कहा था ?

—नहीं।

बीरू हैरान है कि बाबा उस छोटे से कागज से क्यों इतना घबड़ा रहे हैं।

—बाबा, उस कागज में क्या लिखा होगा ?

बाबा जैसे खुद अपने आप से यही सवाल पूछ रहे हों। कुछ सोचकर बोलते हैं, जैसे अपने आपसे ही बोल रहे हों—दो ही बातें हो सकती हैं, या तो नौकरी से जवाब या यहां से तबादला। और यह कहकर बाबा फिर सिर पकड़कर बीरू के पास बैठ जाते हैं।

—बाबा, आप बहनजी को जानते हैं ?

बाबा हां में सिर हिलाकर उसकी ओर देखते हैं।

—एक दिन मां और बहनजी की लड़ाई हुई थी।

—किस बात पर ?

बाबा यह सुनकर हैरान क्यों हो गए हैं ?

—एक दिन वह हमारे घर आई थी। मां ने उसे घर से निकाल दिया। वह उसी दिन नरेश को लेकर लाहौर चली गई। इस पर देवी भी मां से बहुत लड़ी थी।

—नरेश कौन ? वही, जिसे उसने अपना बेटा बना रखा है ? वह यहां आया था ?

—हमारे घर नहीं आया था। पारो है न, उसके घर देवी से मिलता था। पारो कहती थी, देवी उससे शादी करेगी। जब मां आई तो मां को सब पता चल गया। मां ने देवी को बहुत गालियां दीं। कहने लगी, मैं यह शादी कभी भी नहीं होने दूंगी ! उसी दिन मां ने मुझे भी बहुत पीटा था। और उसी से मुझे बुखार भी हो गया था।

बीरू बोलता चला जाता है। बाबा बड़े ध्यान से उसकी बात सुन रहे हैं। सुनते-सुनते मानो थोड़ी देर के लिए उन्हें अपनी चिंताएं भूल गई हों।

—मां कहती है, नरेश लुच्चा लफंगा है, वह बहनजी का लड़का नहीं है। उस दिन उसने बहनजी से कह दिया, तुम ही इससे शादी कर लो।

बाबा उसकी ओर ऐसे देख रहे हैं जैसे बहुत कुछ और जानना चाहते हों। लेकिन न वे पूछते हैं और न वह बताता है। इतने में देवी आ जाती है। उसके साथ पारो भी है ! वे बाबा को देखकर ठिठक जाती हैं। फिर देवी आगे बढ़कर बाबा के सामने सिर झुकाकर खड़ी हो जाती है। बाबा उसके सिर पर हाथ फेरते हैं और देवी की आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगते हैं। उसे रोते देखकर बीरू का गला भी भर आता है।

चारपाई से वह उठ खड़ा होता है। उसे प्यास लगी है। रसोई तक पहुंचते-पहुंचते उसे कई चक्कर आते हैं। रसोई में एक भी साफ गिलास नहीं है। घड़े में पानी नहीं और चूल्हे में आग नहीं।

वह थककर रसोई की दहलीज में ही बैठ जाता है।

ड्योढ़ी का दरवाजा खटाक से खुलता है। बाबा और देवी के सिर एक साथ उठते हैं। मां दरवाजा बंद करके अंदर आती है।

—मेरे कड़े मुझे दे दो !

बाबा सिर झुका लेते हैं।

—मैं कहती हूं निकालो मेरे कड़े !

बाबा कुछ जवाब नहीं देते। गरदन टेढ़ी किए मां की ओर देख भर लेते हैं। वे घुटनों को बांहों की लपेट में लिए बैठे हैं।

मां आगे बढ़कर उनकी जेबें टटोलने लगती हैं। वह अब बाबा के इतने पास है कि बाबा किसी भी क्षण उसकी गरदन दबोच सकते हैं। बीरू की टांगें कांपने लगती हैं।

कहां हैं मेरे कड़े ? कहां हैं ? मैं छाती पीट-पीटकर अपनी जान दे दूंगी, नहीं तो मुझे मेरे कड़े वापस करो। अभी ! इसी घड़ी !

मां की मुट्ठियां भिची हुई हैं और उसका एक-एक अंग कांप रहा है।

अब क्या होगा ?

मां अचानक पूरे जोर से अपनी कमीज खींचकर नोच लेती है। और बीरू की आंखों के सामने अंधेरा छाने लगता है। वह दोनों हाथों से अपना सिर थाम लेता है।

देवी खड़ी देख रही है। आगे बढ़कर मां के हाथ क्यों नहीं पकड़ लेती।

ड्योढ़ी के दरवाजे के बाहर लोग जमा हो रहे हैं।

मां बेतहाशा छाती पीटती चली जा रही है। कह रही है—मैं आज अपने टुकड़े-टुकड़े कर डालूंगी !.. मैं आज तुम्हारे सिर चढ़कर मर जाऊंगी !..नहीं तो बताओ, मेरे कड़े कहां हैं ? बताओ, बताओ, बताओ !..

बाबा आखिर उठते हैं। वे जवानी में रामलीला के दिनों में कभी रावण और कभी अगंद की भूमिका अदा किया करते थे। इस वक्त भी बाबा का रूप कुछ वैसा ही दिखाई दे रहा है। टिकटिकी लगाए

मां की ओर देख रहे हैं। और मां बिलकुल उनके सामने सिर को थोड़ा सा नीचा किए दोनों हाथ ताबड़तोड़ अपने माथे पर मार रही है, जैसे पुराने वक्तों का कोई दरबारी फर्शी सलाम करते करते पागल हो गया हो।

आखिर बाबा हाथ उठाते हैं। मां लुढ़कती हुई ड्योढ़ी के दरवाजे से जा टकराती है। दरवाजे की कुंडी खुल जाती है। और कई लोग एक साथ अंदर दाखिल होते हैं।

लोगों को देखते ही मां चीखें मारकर रोना शुरू कर देती है। बाबा सिर लटकाए खड़े रहते हैं। औरतें मां के इर्द गिर्द घेरा डालने लगती हैं। टक्कर लगने से मां का सिर फूट गया है। वह बार-बार अपने सिर को छूती है और फिर खून से लथड़े हुए हाथों की ओर देखकर ऊंचा-ऊंचा रोना शुरू कर देती है।

देवी अब भी मां से अलग खड़ी है।

बाबा कमरे में चले जाते हैं और दरवाजा अंदर से बंद कर लेते हैं।

दरवाजा बंद होता देख मां हाथ ऊपर उठाकर चिल्लाने लगती है—हाय, दरवाजा खुलवाओ ! कहीं वो अपने आपको कुछ कर न लें।

कुछ औरतें कमरे के दरवाजे की ओर लपकती हैं। कुछ आदमी भी अंदर आ गए हैं। वे सब दरवाजा खटखटा रहे हैं और बाबा का नाम ले लेकर उन्हें दरवाजा खोलने के लिए कह रहे हैं। मां भी उठकर उन लोगों में शामिल हो गई है। कह रही है—हाय दरवाजा खुलवाओ, कहीं वो अपने आपको कुछ कर न लें। देवी भी बाबा को आवाजें दे रही है। लेकिन बाबा अंदर से न जवाब देते हैं, न दरवाजा खोलते हैं।

बीरू दहलीज से उठकर रसोई के अंदर चला जाता है। दरवाजा अंदर से बंद कर लेता है। कुंडी लगाने की कोशिश करता है, लेकिन वह टूटी हुई है। रसोई के एक कोने में एक रस्सी पडी है। बाबा ने दरवाजा अभी तक नहीं खोला। मां चिल्ला रही है दरवाजा तोड़ दो, नहीं तो वो अपने आपको कुछ कर लेंगे ! बीरू की आंखें कोने में पड़ी उस पर जमी हुई हैं और कान बाहर से आ रही आवाजों पर। देवी चिल्ला रही है, बाबा, बाबा, बाबा ! मां का गला बैठ गया है, हाय, दरवाजा तोड़ दो, लोगो, नहीं तो मैं क्या करूंगी ? देवी कह रही है, ले लिए कड़े ? मिल गए कड़े ? और मांगो कड़े ! पारो कह रही है, देवी, तुम आवाज दो, बीरू को बुलाओ, वह आवाज देगा तो जरूर खोल देंगे।...हाय, दरवाजा खोल दो !...हाय, दरवाजा, तोड़ दो ! ...हाय, अगर उन्होंने कुछ कर लिया, तो मैं क्या करूंगी ? ...अगर इतना ही डर था, तो पहले क्यों नहीं सोचा ?...राम-राम ! परम पिता परमेश्वर ! दरवाजा खोलो, भाई !...पुलिस को बुलवाओ. ...पुलिस को मत बुलवाओ...पहले ही बेचारे की नौकरी खतरे में है ...हाय, मैं क्या करूं ? ...और बीरू रसोई के कोने में पड़ी उस रस्सी को उठाकर अपने गले में डाल लेता है। यह रस्सी उनकी गाय की है। गाय मर गई। इतनी छोटी रस्सी गाय की कैसे हो सकती है ? बछड़े की होगी। बछड़ा भी गाय के साथ ही मर गया था। बाबा ने दरवाजा अभी तक नहीं खोला।...हाय, अब तोड़ भी दो दरवाजा ! कहीं उन्होंने अपने आपको कुछ कर लिया, तो...तुम सब चुप कर जाओ, मुझे बात करने दो। ...तुम बातें ही करते रहना ! मैं कह रहा हूं, पुलिस को बुला लो !...पुलिस क्या करेगी ?...नहीं तो तुम करोगे ? ...हाय ! दरवाजा तोड़ दो, लोगो।

उधर बाबा के कमरे का दरवाजा टूटता है, इधर रसोई में बीरू

धड़ाम से नीचे गिर पड़ता है। गिरने से उसके गले में पड़ा फंदा कुछ ढीला पड़ जाता है और बाहर से आ रहा शोर फिर धीरे-धीरे उसके कानों में भनभनाने लगता है। बीरू जिन्दा है।